

संजय की कलम से ..

पुरानी स्मृतियों की समाप्ति तथा क्षमा भाव

हमारे मन में दूसरे की बुराइयों, कमजोरियों, दुर्व्यवहार, दुश्चेष्टाओं इत्यादि की स्मृति बनी रहती है। एक बार किसी के बारे में कोई छाप (impression) मन पर पड़ जाती है तो वह भूलती नहीं है। वह व्यक्ति बदल जाता है परन्तु उसके बारे में वह छाप मिटानी हमारे लिए असंभव या मुश्किल होती है। वह हमारी दृष्टि, वृत्ति और कृति को बिगाड़ती है। ईश्वरीय स्मृति में स्थिति प्राप्त करने में भी वह निकृष्ट स्मृति बाधक होती है। उस व्यक्ति ने यदि किसी बुरे संस्कार के वशीभूत होकर हमसे कुछ दुर्व्यवहार भी किया था तो हम उसे क्षमा नहीं दे पाते। हम उसकी भूल को अपने मन को पीड़ित करने वाला शूल या त्रिशूल बना लेते हैं। उसकी बुराई हमारे मन में उसके प्रति घृणा, द्वेष, नाराजगी इत्यादि के भाव जागृत करती रहती है। अतः ऐसी शक्ति की जरूरत है कि हम किसी की बुराई को भुला दें और उसे अपने मन ही मन में क्षमा कर दें। भुलाने और क्षमा करने (to forget and forgive) की शक्ति के बिना हमारा मन उज्ज्वल और हल्का नहीं हो सकता। यदि हम भुलायेंगे नहीं तो क्षमा भी नहीं कर सकेंगे और यदि क्षमा नहीं करेंगे तो भुला भी नहीं

सकेंगे और यदि भुला नहीं सकेंगे तो ईश्वरीय स्मृति में निखार आयेगा ही नहीं और सुख-चैन की नींद सो भी नहीं सकेंगे। हम में स्वाभाविक रूप से भुलाने की क्षमता है अवश्य परन्तु उलट चाल के कारण वह क्षमता कमजोर हो गई है। अब उसका अभ्यास करना जरूरी है।

सांसारिक दृष्टि से किसी ने भी अक्षम्य अपराध अथवा व्यवहार भी किया हो तो भी योगी की शोभा इसी में है कि वह क्षमा करने की शक्ति धारण करे। क्षमा न कर सकना एक बहुत बड़ी कमजोरी है। परन्तु केवल दूसरों को ही क्षमा करना पर्याप्त नहीं है बल्कि हमने यदि कुछ अनिष्ट, अयुक्त, अमर्यादित अथवा अभद्रतापूर्ण व्यवहार किया है तो हमें भी दूसरों से उसके लिए क्षमा माँगनी चाहिए अथवा खेद (sorry) प्रगट करना चाहिए वरना न तो अभिमान मिटेगा, न ही बुरा करने की आदत टलेगी। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम तो बड़े हैं, छोटों को यह क्यों कहें कि 'क्षमा कीजिये' अथवा कि 'हमसे गलती हुई है' (I am sorry)। हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि गलती मानने से तो दूसरा व्यक्ति हमारे सिर पर चढ़ जायेगा और इस

(शेष.. पृष्ठ 16 पर)

अमृत-सूची

- ◇ सुन्दरता : आवरण की या आचरण की (सम्पादकीय) .. 2
- ◇ पुरुषोत्तम संगमयुग एवं..... 4
- ◇ 'पत्र' संपादक के नाम..... 7
- ◇ मैंने बाबा को तपस्या करते..... 8
- ◇ ग्लोबल हॉस्पिटल में..... 10
- ◇ जिसको राखे साँई वो..... 11
- ◇ असली खजाना..... 12
- ◇ सचित्र सेवा समाचार..... 13
- ◇ राजयोग अपनाओ..... 15
- ◇ सचित्र सेवा समाचार..... 17
- ◇ आनन्द का छद्म रूप है..... 21
- ◇ अशान्ति से ॐ शान्ति तक.. 23
- ◇ सादगी..... 24
- ◇ प्राकृतिक प्रदूषण का कारण.. 27
- ◇ नवजीवन दिला दो (कविता) . 28
- ◇ एक घटना मेरे अलौकिक.... 29
- ◇ ईश्वरीय टॉनिक..... 31
- ◇ ईश्वरीय वरदानों से विभूषित सुन्दरी बहन (पूना)..... 32

फार्म - 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510
2. प्रकाशनावधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता - उपरोक्त
4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता - उपरोक्त
5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश क्या भारत का नागरिक है? हाँ पता - उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

सुन्दरता : आवरण की या आचरण की

भौतिकवादी सौन्दर्यशास्त्री मानता है कि 'सुन्दरता द्रष्टा की दृष्टि में है।' इसका अर्थ यह हुआ कि द्रष्टा को जो वस्तु, व्यक्ति सुन्दर लगे वो सुन्दर और जो न लगे वो असुन्दर। आध्यात्मिक सौन्दर्यशास्त्री इससे भिन्न विचार रखता है। वह कहता है कि सुन्दरता व्यक्तिनिष्ठ (व्यक्ति की दृष्टि पर आधारित) न होकर वस्तुनिष्ठ है अर्थात् सुन्दरता उस वस्तु में निहित है और वस्तु में सुन्दरता उसके शिवत्व के कारण है। सुन्दर क्या है? जो शिव है वही सुन्दर है। शिवत्व नहीं तो सौन्दर्य भी नहीं। **यत् शिवं तत् सुन्दरम्।**

मन का अल्पकालीन सुख देने वाली वस्तु सुन्दर है – यह सुन्दरता की बचकानी परिभाषा है। नेत्रों को बाँध लेने वाली वस्तु सुन्दर है, यह भी भ्रामक धारणा है। भक्ति मार्ग के शास्त्र रामायण में दो नारी पात्रों का राम से मिलन होता दिखाया गया है। एक है सूर्पनखा और दूसरी है भीलनी। सूर्पनखा की देह, साज-सज्जा, बनाव-शृंगार, हाव-भाव सब नेत्रों को सुन्दर लगाने वाले हैं। वह एक राजा की बहन है, धन से, साधनों से संपन्न है, नवयौवना है परन्तु उसमें शिवत्व नहीं है। उसके हृदय में कल्याण भाव का अंश भी नहीं है। दूसरी तरफ भीलनी है। भले

ही शरीर की चमड़ी काली है, वाणी विद्वतापूर्ण नहीं है, तथाकथित उच्च कुल से भी वंचित है परन्तु शिवत्व से ओत-प्रोत है। उसके रोम-रोम में परोपकार, सेवा, निःस्वार्थ भावना, ईश्वरीय प्रेम, एकनिष्ठ श्रद्धा और त्याग भरा पड़ा है। दोनों नारी पात्रों में एक का आवरण सुन्दर है और दूसरी का आचरण। एक का सौन्दर्य आँखों तक है, दूसरी का सीधा दिल और आत्मा तक पैठ बनाता है। एक को देखकर भ्रुकुटि तनती है और दूसरी को देखकर मस्तक नत होता है। इससे स्पष्ट हो रहा है कि सुन्दर वही है जिसमें शिवत्व है।

सुख दो प्रकार का है, अल्पकाल का और दीर्घकाल का। कई वस्तुएँ अल्पकाल का सुख देती हैं परन्तु फिर दुखदायी बन जाती हैं। जिस सुख की परिणति दुख हो, वह अन्ततः दुख ही तो हुआ और जिस चीज़ की परिणति सुख हो, वह अन्ततः सुखदायी ही मानी जाएगी।

हम जीवन-भर इंद्रियों द्वारा भोगे जाने वाले पदार्थों के पीछे भागते रहते हैं परन्तु उनमें शिवत्व है या नहीं, इसका आकलन नहीं करते। जैसे सागर में लहरें उठती हैं और किनारे पर पड़े मिट्टी के कणों की ओर दौड़ती हैं। सूर्य की किरणें इन कणों पर पड़कर रजतकणों की भ्रांति पैदा

करती हैं। लहरें द्रुतगति से बढ़कर इन्हें अपने में समेटने का प्रयास करती हैं परन्तु रजतकण कहाँ? ये तो मात्र धूलकण थे, जो पिघलकर मिट्टी बन गए और स्वच्छ लहर को भी मैला कर गए। इसी प्रकार मानव हृदय में भी जब इंद्रिय भोगों से प्रेरित लहरें उठने लगती हैं तो तुच्छ पदार्थों को समेटने में लग जाती हैं। जब तुच्छ चीज़ों पर इंद्रिय कामना, इच्छा, लालसा, तृष्णा का लेपन हो जाता है तो वे महान नज़र आने लगती हैं। वासना और कामना के छींटे पड़ते ही तुच्छ वस्तुएँ, तुच्छ व्यक्ति और तुच्छ परिस्थितियाँ भी चमकती हुई, आकर्षित करती हुई प्रतीत होती हैं। यदि इच्छा, कामना का लेपन इनसे हटा लिया जाए तो इनमें न चमक है, न आकर्षण। जैसे लहर, कणों को समेट तो लेती है पर फिर उस कुसंग से मैली भी हो जाती है, उसी प्रकार हम भी तुच्छ पदार्थों, तुच्छ प्राणियों के मोहपाश में बँध तो जाते हैं फिर मैले भी होते जाते हैं। **जहाँ इच्छाओं का पाश है वहाँ शिवत्व का नाश है। इच्छा बलवती है तो निश्चित जानिए, शिवत्व की विरोधी मति है अर्थात् कुमति है।**

एक बहन ने विद्यालय में घटी एक घटना का जिक्र करते हुए बताया कि एक बार हमारी कक्षा में एक कुरूप

लड़की का, जिसके चेहरे पर चेचक के दाग थे, दाखिला हुआ। मैं और मेरी सहेलियाँ उससे नफरत करती थीं। हम उसे अपने साथ खेलने नहीं देती थीं और बात-बात में फटकारती थीं। फिर भी वह हमसे नम्रतापूर्वक व्यवहार करती थी। वह बहन पढ़ाई में तेज़ निकली, विद्यालय की हर गतिविधि में भी आगे रहती। सभी शिक्षक उसकी महिमा करने लगे तो हमें और ज्यादा चिढ़ होने लगी। हम उसे अपमानित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते थे। उसके मधुर व्यवहार को देख मैं सोचती थी कि यह कैसी लड़की है जो चुपचाप तिरस्कार को सहन कर लेती है।

एक दिन कक्षा में अचानक तबीयत खराब होने के कारण मेरी उल्टियाँ शुरू हो गईं। मेरी सुन्दर सहेलियाँ उल्टी की बदबू से दूर हट गईं। तब शिक्षिका ने भी मुझे डाँटा कि जब तबीयत ठीक ही नहीं थी तो विद्यालय क्यों आई थी। मैं असहाय महसूस करने लगी। तभी वह बहन मेरे पास आई, अपनी पानी की बोतल से मेरा मुँह धोया, रूमाल से पोंछा और कॉपी से मुझे हवा करने लगी। उसके आचरण की इस सुन्दरता और भव्यता से मेरा अहंकार पिघल गया और मन ग्लानि से भर उठा। सुन्दर समझ मैं सदा जिनके इर्द-गिर्द डोलती थी आज वे मुझे कुरूप और हेय तथा यह बहन परम सुन्दर नज़र

आने लगी। जब वह अस्पताल में भी मुझसे मिलने आई तो मैंने उससे अपने पिछले दुर्व्यवहार के लिए क्षमा माँगी। इस घटना ने सुन्दरता के मेरे मानदण्ड बदल दिए। मैं समझ गई कि आवरण की नहीं, आचरण की सुन्दरता ही वास्तविक सुन्दरता है।

भगवान शिव कहते हैं, बच्चे देह तो आवरण है। इस आवरण के माध्यम से आचरण करने वाली आत्मा है। आचरण का अर्थ है, चरणों से लेकर मस्तक तक हर शरीरांग द्वारा किया गया श्रेष्ठ कर्म। शरीर और इसका हर अंग धर्म की साधना के लिए है। इन अंगों को हम न तो परपीड़ा में लगा सकते हैं और न ही इन अंगों के द्वारा मिलने वाले अल्पकालीन सुख में डुबोकर आत्मा का हनन कर सकते हैं। जैसे किसी चिन्तक ने कहा है कि कुत्ता जब सूखी हड्डी को चबाता है तो उसके कोमल मुख से खून रिस-रिस कर उसके उदर में जाने लगता है। वह अपने ही खून का स्वाद लेने में यह सोचकर मस्त रहता है कि यह खून हड्डी से निकल रहा है। इस प्रकार अपना खून पीने की नासमझी में वह डूबा रहता है। यदि दूसरा कुत्ता हड्डी छिनने आए तो उस पर भी टूट पड़ता है। इसी प्रकार मानव भी इंद्रियों के भोगों में जब रस लेता है तो सोचता है कि यह सुख मुझे अमुक पदार्थ या व्यक्ति से मिल रहा है परन्तु वास्तव में

तो इस सुख की प्राप्ति में उसके अपने अंग-प्रत्यंग निचुड़ रहे होते हैं। भोग वैसे ही रहते हैं और वह निचुड़ता जाता है। रोग और जरा का शिकार होता जाता है। कोई दूसरा इन भोगों में बाधा डाले तो वह उस पर टूट पड़ता है। अतः इंद्रियों की अल्पकालीन तुष्टि में मन न लगाकर मन को भगवान शिव में लगाकर शाश्वत सुख प्राप्त करें। मुझे कोई प्यार करे, मान दे, अपने पास बिठाए, दिल का हाल-चाल पूछे ... यह चाहना आत्मा की है। आत्मा को अपनी गोद में समाने वाला, प्यार करने वाला, मान देने वाला एक परमात्मा ही है, दूजा है ही नहीं। परन्तु गलती कहाँ होती है? हम आत्मा की इस इच्छा को देह द्वारा पूरा करना चाहते हैं अर्थात् शरीर पर मैं का आरोपण करके शरीर से प्यार करने वाले, उसकी महिमा करने वाले की खोज में भटकते रहते हैं। यदि ऐसा कोई मिल भी जाए तो तृप्ति नहीं मिलती। क्योंकि इच्छा तो आत्मा की थी, देह से प्यार करने वाले की पहुँच आत्मा तक तो हुई नहीं, और हम प्यासे के प्यासे रह जाते हैं। परमात्मा पिता से आलिंगनबद्ध होकर ही आत्मा की यह प्यास बुझ सकती है। परमात्मा शिव ही सबसे सुन्दर है। उसका प्रेम ही शाश्वत और कल्याणकारी है। उस प्रेम में ही तृप्ति, शक्ति और दिव्य अनुभूति है।

— ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं परमात्मा का परमशिक्षक के रूप में कार्य

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परमपिता परमात्मा के साथ विशेष तीन संबंध हम सबके हैं – परमपिता, परमशिक्षक एवं परमसतगुरु। तीनों संबंधों से अलग-अलग प्रकार की प्राप्ति होती है, जैसे कि परमपिता के रूप में प्यार और वर्सा मिलता है। परमशिक्षक के रूप में ज्ञान, शिक्षा और सर्व प्रकार की सावधानी मिलती है। परमसतगुरु के रूप में मुक्ति-जीवन्मुक्ति पद की प्राप्ति होती है। परमात्मा का दिव्य अवतरण तथा इन तीनों रूपों से कर्त्तव्य संगमयुग पर होने के कारण ही संगमयुग को सर्वश्रेष्ठ युग कहते हैं। इन तीनों रूपों के कर्त्तव्य द्वारा परमात्मा हमें पुरुषोत्तम बनाते हैं।

परमात्मा का जब दिव्य अवतरण होता है तब विश्व में अनेक प्रकार की मान्यतायें होती हैं। भक्ति मार्ग की एक मान्यता के हिसाब से मुंडन कराना सर्वश्रेष्ठ लक्षण है जबकि सिख धर्म में मान्यता है कि कभी मुंडन नहीं कराना चाहिए। इस प्रकार की कई मान्यतायें विरोधाभासी हैं। परमपिता परमात्मा आकर सभी स्थूल मान्यताओं से मुक्त कर वास्तविकता की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं।

पुरानी मान्यताओं में परिवर्तन कराना और नई मान्यताओं के प्रति

दृढ़ संकल्पित करना मासी का घर नहीं है, मिसाल के तौर पर, परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य के बारे में मैंने ब्रह्मा बाबा के मुख से सुना कि परमात्मा भी ड्रामा के बंधन में बंधा हुआ है, ड्रामा श्रेष्ठ है, न कि परमात्मा। तब मेरे लिए यह बात मानना बहुत कठिन था और मैंने ब्रह्मा बाबा को कहा कि आपके परमात्मा से तो हमारा परमात्मा श्रेष्ठ है क्योंकि हम परमात्मा के लिए कहते हैं, 'कर्तुम अकर्तुम और अन्यथा कर्तुम है' अर्थात् वह जो चाहे वो कर सकता है। सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त, सर्वशक्तिवान परमात्मा ड्रामा के बंधन में कैसे बंधा हुआ है? तब ब्रह्मा बाबा ने कहा – बच्चे, ऐसा कोई परमात्मा है ही नहीं, जैसा आप मानते हैं। इस प्रकार प्रचलित मान्यताओं के विरुद्ध नई बातों में श्रद्धा निर्मित करने के लिए परमपिता परमात्मा हमें ज्ञान देते रहे। जैसे एक लड्डू होता है, उसे चींटियों के ऊपर रख देते हैं तो चींटियाँ मर जाती हैं परंतु उसी लड्डू को चूर-चूर करके डालते हैं तो चींटियाँ उसको सहर्ष स्वीकार कर लेती हैं और खाकर हृष्ट-पुष्ट हो जाती हैं। इसी प्रकार, शिवबाबा परमशिक्षक के रूप में, ज्ञान की नई बातों को एटम बम, हाइड्रोजन बम के मुआफिक धमाके से हमारे सामने नहीं

रखते बल्कि आहिस्ते-आहिस्ते युक्ति से और एक के बाद एक, समय प्रति समय, परम सत्य को हमारे सामने प्रकट करते हैं। जैसे सीढ़ी में एक के बाद एक पौड़ियाँ (steps) होती हैं और उनके आधार पर कितने भी ऊँचे भवन तक हम पहुँच सकते हैं, उसी तरह, शिवबाबा परमशिक्षक के रूप में एक से एक नई विचारधारा प्रकट करते रहे और हम हज़म करते-करते ऊँची मंज़िल तक पहुँच गये और हमारी श्रद्धा को ठेस भी नहीं पहुँची।

लौकिक दुनिया में, प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को गणित के सरल सिद्धांत सिखाये जाते हैं। गणित के गुह्य सिद्धांत न सिखाये जाने का अर्थ यह नहीं है कि गणित के ज्ञान की गुह्यता उनसे छिपाई जाती है परंतु बौद्धिक स्तर के आधार पर जितना सीखना सहज है उतना ही उनको बताया जाता है। बाबा ने भी मुरली में यही कहा है कि बाबा आहिस्ते-आहिस्ते ज्ञान की हर बात बताते हैं ताकि बच्चे सहज स्वीकार कर सकें।

पुरानी मान्यताओं में आमूल-चूल परिवर्तन कराना और नई बातों में श्रद्धा बिठाना बहुत कठिन बात है। एक विद्वान वक्ता महाभारत के पात्रों पर व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि मैं वास्तविकता के आधार पर

महाभारत के पात्रों के ऊपर अपने विचार प्रगट करूंगा। उन्होंने भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य के चरित्रों का खंडन यह कहकर कर दिया कि वे राजसत्ता के दास बन गये क्योंकि द्रौपदी वस्त्रहरण का कांड देखते हुए भी वे कुछ नहीं बोले। बाद में व्यक्तिगत चर्चा के समय मैंने उन विद्वान वक्ता से कहा कि वास्तव में तो द्रौपदी वस्त्र-हरण असली महाभारत में है ही नहीं। 8वीं सदी में भट्टनारायण नाम के लेखक ने 'वेणी संहारम्' नामक एक नाटक लिखा था उसके बाद से महाभारत में यह प्रसंग प्रक्षिप्त है। मैंने उनसे कहा कि आपका फर्ज था, यह कहना कि द्रौपदी वस्त्रहरण जैसा प्रसंग हुआ ही नहीं इसलिए भीष्म पितामह और गुरु द्रोणाचार्य के चरित्र पर जो आक्षेप उठाए गए हैं, उनका खंडन होना चाहिए। तब उस विद्वान वक्ता ने कहा कि रमेश जी, जिन मान्यताओं के ऊपर लोगों का विश्वास है उन्हें मैं तोड़ नहीं सकता हूँ क्योंकि यदि नई मान्यताओं पर श्रोताओं की श्रद्धा निर्मित न कर सकूँ तो मेरे द्वारा श्रद्धाशून्य समाज का निर्माण हो जायेगा। ऐसा 14वीं सदी में ईसाई धर्म में हुआ जब मध्य यूरोप के मार्टिन लूथर जैसे दर्शनशास्त्रियों ने रोमन कैथोलिक मान्यताओं के ऊपर प्रहार किया और उन्होंने प्रोटेस्टेण्ट विचारधारा समाज के सम्मुख रखी। समाज प्रोटेस्टेण्ट धर्म रूपी नई विचारधारा को स्वीकार नहीं कर सका और पुरानी मान्यताओं के ऊपर

उनकी श्रद्धा टूट गई फलस्वरूप श्रद्धाशून्य समाज का निर्माण हो गया, ऐसा पाप मैं नहीं करना चाहता हूँ। तब मैंने उनसे कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था में तो परमात्मा बहुत युक्ति से परमशिक्षक के रूप में आहिस्ते-आहिस्ते पुरानी मान्यताओं के स्थान पर नई और वास्तविक आध्यात्मिक बातें सिखा रहे हैं। तब उन्होंने कहा कि मुझे मालूम है, मैंने ब्रह्माकुमारी संस्था का ज्ञान सुना है और पुरानी जड़ मान्यताओं से मुक्त कराकर नई मान्यताओं में श्रद्धा बिठाना, यह कार्य सिर्फ परमात्मा ही कर सकते हैं।

महाभारत और रामायण के बारे में लोकमान्य तिलक जी जैसे विद्वान लेखकों ने लिखा है कि ये तो बड़े-बड़े महाकाव्य (*epics*) हैं। इनके द्वारा समाज को नीतियों का ज्ञान दिया गया। पहले जय नाम का ग्रंथ लिखा गया फिर विजय, उसके बाद भारत नाम का ग्रंथ बना और फिर कालांतर में उस समय के व्यास ने अपने शिष्यों द्वारा उसमें कई प्रसंग प्रक्षिप्त कर उसे महाभारत के रूप में प्रसिद्ध किया और श्रीमद्भगवद् गीता भी उसमें प्रक्षिप्त रूप में शामिल की गई, ऐसा इतिहास है। परंतु लोगों को तो द्वापरयुग के अंत में श्री कृष्ण-अर्जुन आदि पात्रों के माध्यम से महाभारत का युद्ध हुआ, ऐसी बातें बताई जाती हैं। इन बातों की वास्तविकता परमपिता परमात्मा ने परमशिक्षक के रूप में बहुत सहज रूप से बताई है। परमात्मा के दस अवतारों का भी जो

गायन है वह वास्तव में परमात्मा के एक ही अवतरण के समय किये गए विभिन्न कर्तव्यों का अलग-अलग कथाओं के रूप में स्पष्टीकरण किया गया है, ये कितनी समझने की बातें हैं।

परमात्मा का स्वरूप हजारों सूर्यों से भी ज्यादा तेजस्वी है, ऐसी हम मान्यता रखते थे। बाद में परमात्मा ने ही अपने ज्योतिर्बिंदु स्वरूप की वास्तविकता बताई। इस प्रकार से परमात्मा के परिचय के बारे में भी परमशिक्षक के रूप में परमात्मा ने आहिस्ते-आहिस्ते हम सबको लाभान्वित किया।

ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा का बड़े स्वरूप का चित्र मुंबई में छपवाया था। चित्र के ऊपर लोहे की पत्ती लगवाकर धागा लगवाया गया था ताकि हम बच्चे उस चित्र को दीवार पर सहजता से लगा सकें। बाद में परमपिता परमात्मा ने परमशिक्षक के रूप में ब्रह्मा तन द्वारा उस चित्र के बारे में भी बताया कि वास्तव में मेरा स्वरूप इतना बड़ा नहीं है, मेरा स्वरूप तो ज्योतिर्बिंदु है। तब मैंने ब्रह्मा बाबा के माध्यम से शिवबाबा से पूछा कि यह चित्र तो आपने ही बनवाया, छपवाया और सौगात में दिया अब आप ही कहते हैं कि मेरा स्वरूप इतना बड़ा नहीं है, ज्योतिर्स्वरूप है तो पहले आपने क्यों इतना बड़ा चित्र छपवाया? तब बाबा ने कहा कि अगर मैं पहले से ही कहता तो आप बच्चे इसे स्वीकार नहीं करते क्योंकि आप बच्चों ने शिवलिंग के रूप की प्रतिमायें देखी

हैं। आप बच्चों में से अभी तक भक्ति के संस्कार पूर्ण रूप से गये नहीं हैं इसलिए आपने इस बड़े चित्र को ही मेरा स्वरूप समझ कर उसके साथ योग लगाना शुरू किया, फलस्वरूप, मुझे अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय देना पड़ा; क्योंकि आप बच्चों में भक्ति का कोई भी संस्कार रह न जाये, यह ध्यान मैं अवश्य रखता हूँ। भक्ति के संस्कार और मेरा यह यादगार शिवलिंग रूप का स्वरूप हर कल्प में द्वापरयुग से ही आप सबके सम्मुख प्रचलित होगा।

हम आत्माओं ने परमात्मा के चित्र के बारे में अनेक प्रकार की कल्पनायें कीं और शिव पिता का किरणों वाला चित्र बनाया। कइयों ने 12 किरणों वाला, कइयों ने 16 किरणों वाला, कइयों ने 20 तो कुछेक ने 24 किरणों वाला, एक सेन्टर ने 48 किरणों वाला चित्र बनाया। तब हमने अव्यक्त बाबा से संदेश में पूछा कि आपका कितने किरणों वाला चित्र छपवायें। शिव बाबा ने संदेश में जवाब दिया कि किरणों वाला स्वरूप तो मेरा है ही नहीं, मेरा तो ज्योतिस्वरूप है परंतु ज्योतिबिंदु को लोग समझ नहीं सकेंगे इसलिए किरणों वाला छपवाना है तो 16 किरणों वाला चित्र छपवा सकते हैं क्योंकि मैं आप बच्चों को सोलह कला संपूर्ण बनाने आया हुआ हूँ। इस तरह से 16 किरणों वाला परमात्मा का स्वरूप हम सबने स्वीकार किया और उसको ट्रेडमार्क के रूप में रजिस्टर्ड कराया।

ऐसे ही शिव बाबा ने ज्ञान की अनेक बातें और विधियाँ परमशिक्षक के रूप में हँसते-हँसते सिखाई हैं। कई वर्षों तक सुबह चार बजे उठने की बात हमारे पुरुषार्थ में थी ही नहीं। बाबा-मम्मा सवेरे जल्दी उठते थे और योग आदि करते थे। हम बच्चों के आगे वह विधि स्पष्ट नहीं थी। बाद में साकार मुरली द्वारा शिव बाबा ने चार बजे उठने का महत्त्व बताया। मुझे याद है, तब हमारे दैवी भ्राता माथुर जी ने हल्के रूप में विरोध प्रकट करते हुए कहा कि बाबा, यह चार बजे उठने की बात अभी तक तो आपने बताई नहीं, अब हम क्यों इसे करें? तब ब्रह्मा बाबा ने उस बात को सहज रूप में समझा दिया कि यह तो पुरुषार्थ है; जिन बच्चों को करना है वो करें; करने से क्या प्राप्ति होगी, वह मैं आपको बता रहा हूँ। इस प्रकार, चार बजे उठने की बात काफी समय बाद हमारे ज्ञान में प्रचलित हुई क्योंकि अगर शुरू में बताते तो हम बच्चे शायद उस बात को स्वीकार नहीं करते।

परमात्मा ने परमशिक्षक के रूप में हम सबके अंदर क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, यह बहुत गुह्य बात है। जैसे साम्यवाद में सरकार जबर्दस्ती नियमों का पालन कराती है, ऐसा बाबा ने नहीं किया लेकिन धीरे-धीरे हममें परिवर्तन लाया। अगर ऐसा नहीं होता तो उसके भारी प्रत्याघात हो सकते थे।

जब तक तर्क को ठीक से नहीं समझते हैं तब तक गलती होती है।

इस पर एक कहानी है कि एक भाई ने एक अंधे को कहा कि दूध सफेद होता है। अंधे ने पूछा, सफेद क्या होता है? तब उस भाई ने बताया कि बगुले जैसा होता है। अंधे ने फिर पूछा, बगुला कैसा होता है? उस भाई ने अंधे के हाथ को बगुले की गर्दन जैसा गोल बनाकर बताया कि बगुला ऐसा होता है। अंधे ने कहा, अब मैं समझा कि दूध ऐसे गोल गर्दन वाला होता है। सिद्धांतों को समझाने के लिए ऐसे जो उदाहरण दिये जाते हैं उन्हें सही स्वरूप में न समझने से उपरोक्त घटना जैसा हो जायेगा। मंजिल हमारी सीढ़ी नहीं, सीढ़ी तो लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है और अगर हम साधन और साध्य के बीच का फर्क नहीं समझेंगे तो दुर्घटना हो जायेगी और यह दुर्घटना न हो उसके लिए ही शिव बाबा ने परमशिक्षक के रूप में बहुत सहज रूप से 73 वर्षों के यज्ञ इतिहास में हँसते-हँसते हमें इस मंजिल पर लाया है।

यज्ञ का इतिहास 'आदिदेव' पुस्तक में परमपिता के रूप में लिखा गया है परंतु परमात्मा द्वारा परमशिक्षक के रूप में समय प्रति समय जो ज्ञान की नई-नई बातें बताई गई हैं उस दृष्टिकोण से भी यज्ञ का इतिहास लिखा जायेगा तो परमात्मा के परमशिक्षक के रूप के दिव्य कर्त्तव्य को भी हम विश्व के सामने प्रसिद्ध कर सकेंगे।





‘पत्र’ संपादक के नाम

‘ज्ञानामृत’ के सभी लेख मन को मोहने वाले हैं लेकिन बड़ा अच्छा लग रहा है जो बाबा ने एक पुलिस अधिकारी को भी असत्य से सत्य की ओर जाने का रास्ता दिखा दिया। ॐ शान्ति का महामंत्र ही परमात्मा पिता की छत्रछाया है। बाबा, वाह! आपने कमाल कर दिया। धन्यवाद ज्ञानामृत माता का! धन्यवाद ब्रह्माकुमार सत्यवीर जी का जो बाबा की कृपा से मिसाल बन गये।

– ब्र.कु. प्रकाशचन्द, साहिबाबाद

ज्ञानामृत पत्रिका के फरवरी 09 के अंक में प्रकाशित लघु नाटिका ‘शिव अवतरण’ पढ़ने में मनोरंजक तथा परिवर्तन के लिए प्रेरक लगी। वर्तमान समय स्वयं शिव धरा पर पधार कर विश्व परिवर्तन का कार्य ब्रह्मावत्सों द्वारा करा रहे हैं। ज्ञानामृत इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है। इसमें छपे लेख उत्कृष्ट, सरल तथा ज्ञानवर्द्धक हैं। इसे पढ़कर हम अपना और दूसरों का भी कल्याण करें, ऐसी शुभकामना है। ज्ञानामृत परिवार को बधाई!

– सन्त पूनिया, नरसाणा, जालौर

दिसंबर, 2008 की पत्रिका में प्रकाशित ‘आइये, रामराज्य की ओर’ लेख पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई और यह भाव उत्पन्न हुआ कि

विकारों के त्याग से हमारा जीवन स्वर्ग में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के समान हीरे-तुल्य बन सकता है। प्रभु के आंचल में बड़ी से बड़ी कठिनाई भी चींटी समान छोटी हो जाती है। ज्ञानामृत युवा पीढ़ी और अन्य लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है जो हमें जीवन में मूल्यों, संस्कारों, गुणों आदि से परिचित करवाती है और निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

– ब्र.कु. गीतिका पुरी, फरीदाबाद

ज्ञानामृत के सभी लेखों, कविताओं, गीतों, अनुभवों, संपादकीय लेखों के प्रति प्रशंसा के पुष्प चढ़ाये बिना हम नहीं रह सकते। जीवन की 24 साल की ज्ञानयात्रा में ज्ञानामृत को सबसे करीबी मित्र के रूप में अनुभव किया है। मानव-मन को दिव्य बनाने वाली पत्रिका को दिल

से शतशतप्रणाम!

– ब्र.कु. वसंतकुमार, सिद्धपुर

‘ज्ञानामृत’ मासिक पत्रिका की, युग परिवर्तन की इस पावन वेला में संसार की प्रत्येक मनुष्यात्मा को महती आवश्यकता है ताकि दुखी व अशान्त आत्माओं का कल्याण व मार्गदर्शन हो। पत्रिका की समस्त लेखनी इतनी पावरफुल है कि एक बार तो आत्मा रूपी बैटरी फुल चार्ज हो जाती है। बहुत ही उमंग व उत्साह मिलता है।

– रौतान सिंह आनन्द,
पुरादुर्जी (आगरा)

नवंबर 2008 के अंक में प्रकाशित सम्पादकीय ‘सपने कौन देखता है?’ बहुत ही सुंदर, ज्ञानवर्धक सुलेख है। ज्ञानामृत पत्रिका ज्ञान का अमृत है।

– ब्र.कु. रामलाल कोरम,
रतनपुर, बिलासपुर

कल्पनातीत क्षति

सहनशीलता के अभाव में समाज को, परिवार को और व्यक्ति को जान-माल की जो क्षति होती है, यदि हम उसके आँकड़े इकट्ठे करें तो वह बहुत चौंका देने वाले होंगे। सहनशीलता के अभाव में होने वाले झगड़े देश के हित को इतना धक्का पहुँचाते हैं कि जितना शायद कोई विरोधी देश भी युद्धकाल में नहीं पहुँचा सकता। सहनशीलता के अभाव में कितने ही लोग, विपरीत परिस्थितियाँ आने पर हृदय-रोग के शिकार हो जाते हैं, मानसिक संतुलन खो बैठते हैं, स्मरण-शक्ति से हाथ धो बैठते हैं अथवा घुल-घुल कर मरने लगते हैं। इस एक गुण के अभाव के कारण संसार मानो जिन्दा लोगों का एक श्मशान-सा बना हुआ है जहाँ मनुष्य मरने से पहले अपने भीतर की आग में जल रहे हैं अतः सहनशील बने रहने की युक्तियाँ, जो ईश्वरीय ज्ञान द्वारा प्राप्त होती हैं, अवश्य अपना लेनी चाहिए।

मैंने बाबा को तपस्या करते देखा है

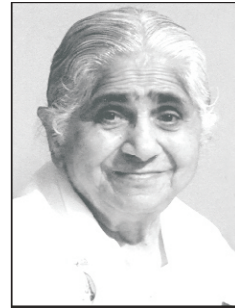
• दादी जानकी

बाबा कहते हैं, बच्चे, अपनी दिल को सच्ची दिल और साफ दिल बनाओ। जब दिल सच्ची और साफ है तो रहमदिल बन जाते हैं। रहमदिल बनने से दिल में थोड़ा भी व्यर्थ रह नहीं सकता। व्यर्थ रखेंगे तो भारी हो जायेंगे। बाबा कहते हैं, इस देह में मोह मत रखो। देह पुरानी है ना! ऐसे रहो जैसे मरजीवा। मरजीवा हुआ तो किसी से क्या मोह रखेगा! कभी यह भी मत सोचो कि यह बहन बहुत अच्छा समझाती है, यह भाई बहुत अच्छा है, नहीं तो उसमें मोह हो जायेगा। मोह थोड़ा भी होगा तो बुद्धि को खींचता रहेगा। ज्ञान है पर योग पूरा नहीं लगता, इसका अर्थ है कि बुद्धि कहीं पुल (खिंच) रही है, आकर्षित हो रही है लेकिन जो नॉलेजफुल है अर्थात् जिसकी बुद्धि ज्ञान से संपन्न है, उसकी बुद्धि कहीं आकर्षित नहीं हो सकती, न बुरी बात में, न अच्छी बात में। यह बुरा है, ऐसा सोचना या मुख से बोलना, यह भी भूल है।

बाबा कहते हैं, बच्चे संकल्प को समर्थ बनाकर रखो। हमारा मन तो स्वच्छ हो ही, साथ-साथ स्थूल सफाई ऐसी होनी चाहिए जो मक्खी-मच्छर कुछ न रहे। मधुबन की सफाई देखकर आने वाले प्रभावित हो जाते हैं। वी.आई.पी. जब आते हैं और देखते हैं कि सभा में सभी ने सफेद

कपड़े पहने हैं तो कहते हैं, क्या मुझे भी सफेद कपड़े मिल सकते हैं? बाबा ने खाना और पहनना दोनों की सादगी सिखाई है। पहले-पहले मैं किसी भी भाई-बहन के घर में जाती थी तो भंडारे में चली जाती थी। वे कहते थे, आप भंडारे में नहीं आओ पर मैं कहती थी कि भंडारे में तो सबसे पहले आऊँगी यह देखने के लिए कि बाबा का भंडारा कैसा रखा है। हमारा शयनकक्ष भी योगी जैसा हो। बाबा का शयनकक्ष आज तपस्याकक्ष बना हुआ है। किसी ने मुझे कहा, तुमने बहुत तपस्या की है। मैंने कहा, मैंने तपस्या की नहीं लेकिन मैंने बाबा को तपस्या करते देखा है। अपनी आँखों से देखा है, कैसे बाबा ने तपस्या की है। बाबा ने जैसे तपस्या की, हम ऐसी तो नहीं कर रहे हैं न! आखिरी दिन तक टांग पर टांग चढ़ाकर बाबा ने मुरली चलाई है।

अगर कोई कहता है, मैंने यज्ञ में इतना दिया है तो यह भी अभिमान है। दिया है तो किसको दिया है? बैंक में जमा किया है। अभी जो जमा कर रहे हो, वही तो आगे मिलेगा। कड़्यों को जमा करने की बड़ी रुचि होती है क्योंकि व्याज मिलता है और धन भी सुरक्षित हो जाता है। अगर पैसे का खज़ाना छिपाकर रखा होगा तो बुद्धि उसमें जायेगी फिर ज्ञान का खज़ाना बुद्धि में नहीं बैठेगा। अगर किसी ने ब्रह्मा भोजन करवाया और कड़्यों के



पेट में गया तो ब्रह्मा भोजन कराने वाले को भी भोजन अच्छे से हज़म हो जायेगा। ब्रह्मा भोजन खाने से कभी तबीयत नहीं बिगड़ती है। लेकिन जो ऐसा-वैसा सोचते हैं उनको कुछ न कुछ हो जाता है। यज्ञ के इतिहास को आप जानते हैं, एक बार बाबा ने कहा, सिर्फ़ डोडा-लस्सी खाना है, साथ में मक्खनी दाल थोड़ी-सी। हमने डोडा-लस्सी भी प्यार से खाया। डोडा-लस्सी के बाद बाबा ने 36 प्रकार का व्यंजन खिलाकर पूछा, बच्चे, कौन-सा भोजन अच्छा था? जिसने कहा, यह भोजन अच्छा है, वो फेल हो गये। कहते हैं, यह भोजन अच्छा है, यह अच्छा नहीं है पर किसके भंडारे से खा रहे हो? बाबा ने गैरंटी ली है, मेरे बच्चे न भूखे रहे हैं, न रहेंगे। ऐसी निश्चयबुद्धि वाले बच्चे अंदर से निश्चिन्त व खुश रहते हैं। अगर किसी का थोड़ा भी चेहरा चिंता वाला है तो बाबा उसकी जिम्मेवारी नहीं लेता। बाबा तो कहता है, बोझा मुझे दे दो और वह व्यर्थ ही अपने सिर पर चढ़ाए बैठा है।

अलबेलापन और उतावलापन, ये दोनों भी भाग्य को कम करने वाले हैं। त्याग भावना में उतावलापन नहीं चाहिए, सोच-समझ कर करना है। ड्रामानुसार जो मेरा हक है, वह सफल हो जाये। अगर कोई मुझे निमित्त बनाता है सफल करने के लिए तो मैं क्या करूँगी, सीधा बाबा के भंडारे में डाल दूँगी। उसने जो दिया, बाबा को दिया, बाबा उसका कई गुणा करके देगा। मैं किसी को क्या दे सकती हूँ। ब्रह्मा बाबा भी कहता है, मैं भी कुछ नहीं देता हूँ, हाँ, मेरे द्वारा शिव बाबा देता है। हम शिव बाबा को समर्पित हुए हैं, किसी व्यक्ति या स्थान को नहीं। कई बहनें, कई बार मुख से ये शब्द निकालती हैं, यह हमारा स्टूडेंट है, यह इतनी सेवा करता है। अरे, तुम मुख से क्यों निकालती हो? मेरे मुख से कभी नहीं निकला होगा, मेरा सेन्टर है। जब लंदन गई तो बाबा ने कहा, मधुवन का मॉडल बनाना है। मैंने कहा, जी बाबा! यज्ञ भगवान का है, भगवान के यज्ञ में डाल रहे हैं, यज्ञ का खा रहे हैं। मैं अपने लिए सेवा क्यों करवाऊँ, मेरे लिए बाबा अंदर ही अंदर आपे ही प्रबंध कर देगा। मुझे न अपना फ़िक्र है, न दूसरे का। बाबा ने कह दिया है, बच्चे, तुमको बेफ़िक्र बादशाह रहना है। बेफ़िक्र तब रहेंगे जब अशारीरी बनने का अभ्यास होगा। भाषण की भी चिन्ता मत करो। यह प्वाइंट सुनाना है, वह सुनाना है, नहीं, बाबा ने जो सुनाया है वह बुद्धि में

कूट-कूट कर भरा हुआ हो। बाबा जब सुनाता था तो बाबा की एक-एक बात दिल को लगती थी। उस समय लगता था, बाबा सारे शास्त्रों का सार सुना रहा है, सच्ची गीता सुना रहा है। ज्ञान का अंदर ही अंदर ऐसा मंथन करें जो प्वाइंट सहज, सरल और रुचिकर बन जाएँ। ऐसे भी न हो कि हम भाषण करते जायें और सुनने वाला थक जाये। थोड़ा-थोड़ा सुनाते जाओ, सुनने वाला अपने में शांति की शक्ति भरता जाये। बाबा की बातें बहुत अच्छी-अच्छी हैं, हमारी भावना है कि सभी इन पर अमल करें। यह करता है, वो नहीं करता है, यह सब हमें देखना ही नहीं है। बाबा ने हमको यही सिखाया है, बच्ची, तू अपना कर, जितना कर सकती है उतना कर। यह करे, वो करे, ये तुम क्यों सोचती हो? समय पर उनको आपे ही करने की प्रेरणा आयेगी। बाबा ने हमको प्री कर दिया है। तुमको चलने की तैयारी अंदर ही अंदर करनी है। तुमको देखकर और भी तैयारी करने लग पड़ेंगे। पकने पर फल अपने आप मिलता है। कच्चा फल खाने से पेट दर्द होता है। समय पर चीजें अपने आप मिल जाती हैं, उतावली से काम बिगड़ता है।

मैं विदेश और भारत दोनों स्थानों पर सेवा करती हूँ तो क्या मैं फालतू बातें सुनती हूँ? बिल्कुल नहीं। बड़ा बनने का मतलब फालतू बातें सुनना नहीं है। तुम अपना काम करो, ऐसी

सेवा करो जो दूसरों को प्रेरणा मिले। अभी विदेश से एक नई बहन आई थी। उसने मिलने के लिए मेरे से स्पेशल समय माँगा। जब मिली तो कहा, मुझे आपसे बहुत प्रेरणायें मिली हैं, अब मुझे बताओ कि मैं ऐसा क्या पुरुषार्थ करूँ जो औरों को मेरे से भी प्रेरणा मिले। मुझे उसकी बात सुनकर बहुत अच्छा लगा। मैंने उसको दिल से समय दिया। शिव बाबा भी ऊँचे से ऊँची हस्ती है और लौकिक दुनिया के हिसाब से ब्रह्मा बाबा भी बहुत महान हस्ती हैं पर दोनों ने ही गिरे हुआओं को बहुत ऊँचा उठाया है। कभी किसी की साहूकारी और गरीबी नहीं देखी और ना ही किसी की जात-पात देखी। सच्चा पुरुषार्थ करने वाले किसी व्यर्थ बात में नहीं जाते हैं, बाबा को ऐसे बच्चे अच्छे लगते हैं। सतयुग में भले हमसे कोई ऊँचा होगा, कोई नीचा होगा पर हम अपने को बदल नहीं सकेंगे। बदलने की स्वतंत्रता संगमयुग पर ही है। हमारा सब फैशन खत्म हो गया, स्वागत के समय बिंदी लगाते, वह भी फालतू खर्चा है।

बाबा झोपड़ी में बैठकर पत्र लिखता था। एक बार मैंने कहा, बाबा, अमुक को याद लिख दो। तो बाबा ने कहा, क्यों बोला, पता है मुझे कौन पत्र लिखा रहा है? जब बाबा पत्र लिख रहा हो तो हम बाबा से बात नहीं कर सकते थे। कमरे में जाते तो भी बाबा योग में बैठा मिलता और बाबा की आँखें! अभी भी बाबा की आँखें

ऐसी हैं जो किसी भी दिशा से देखो, लगेगा बाबा मुझे ही देख रहा है। क्या बाबा की दृष्टि है! क्या बाबा की बच्चों को प्यार करने की भावना है! बाबा ने कहा है, शरीर तो मिट्टी का पुतला है, यहीं रह जायेगा लेकिन इस मिट्टी के पुतले में बैठ आत्मा ऐसा पुरुषार्थ करे जो चारों सब्जेक्ट्स में भरपूर मार्क्स प्राप्त करे। ऐसा श्रेष्ठ कर्म हो जो यहीं बाबा मुझे गले का हार बना लेवे। हमारे साथी भी तीव्र पुरुषार्थ करें, ऐसी भावना होनी चाहिए। कामचलाऊ साथी न हों कि चलो ड्यूटी है, साथ है, नहीं, आपस में इतना प्रेम हो और दिल से निकले कि इसके साथ रहकर बहुत सीखने को

मिला है जैसे बाबा से हमको सीखने को मिला।

एक बार मैं दिल्ली के स्टेशन से तांगे पर बैठकर आ रही थी, भाऊ (दादा विश्वकिशोर) मेरे साथ था। भाऊ ने कहा, मैं देखता हूँ कि बहनें ज्ञान तो अच्छा सुनाती हैं परंतु सुख किसी को कितना देती हैं? यह बात मुझे लग गई। वो दिन और आज का दिन है, मैं चेक करती हूँ, सुख कितनों को मिला। बाबा भी कहता है, आपके सुनाये हुए शब्द शायद न भी याद रख सकें लेकिन जो अनुभव होगा, उसे भूलेंगे नहीं। हम औरों को बाबा-बाबा सिखाने वाले हैं, मैं-मैं सिखाने वाले नहीं। जोन की हदें भी न रहें, बस हम

भारतवासी हैं। भारत में ही सेवा की थी और भारत में ही फल प्राप्त किया, बस यही याद रहे। देह-अभिमान अंदर से बिल्कुल खत्म हो जाये, एक बाबा दूसरा न कोई। सच के अवतार बन जायें। जिसको सच्चा बनने का लक्ष्य होता है उसे सच्चाई के अलावा कुछ नहीं चाहिए। बाबा भी सत्य है, बाबा का ज्ञान भी सत्य है, बाबा प्यार भी रूह को करता है। रूह को जब ऐसा ईश्वरीय प्यार मिलता है तो शुद्ध, शांत हो जाती है, बुद्धि भी अच्छा काम करती है, चेहरा खिल जाता है। ऐसा सूक्ष्म पुरुषार्थ चाहिए, मोटी बुद्धि वाला नहीं।



ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

ब्रह्माकुमारी बिन्नी, जनसंपर्क अधिकारी, ग्लोबल हॉस्पिटल

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा

(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)

दिनांक : 15, 16 अप्रैल तथा 1, 2 व 3 मई 2009

सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन (U. K. Trained)

पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें -

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131

विशेष यूरोलॉजी ऑपरेशन कार्यक्रम

दिनांक : 24 व 25 अप्रैल 2009 (रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख 20 अप्रैल 2009)

सर्जरी : अहमदाबाद अपोलो हॉस्पिटल के प्रसिद्ध यूरोलॉजिस्ट डॉ. दर्शन के.शाह (एम.एस.एम.सी.एच.) द्वारा ऑपरेशन

नोट : गुर्दे व मूत्र संबंधी रोग, प्रोस्टेट व पेशाब की थैली में पथरी वाले रोगी अवश्य लाभ लें।

नियमित लेप्रोस्कोपिक ऑपरेशन सुविधा

सर्जरी सुविधा : चैन्नई के प्रसिद्ध व अनुभवी डॉ. आरासु (एम.एस.एम.सी.एच.) व

वरिष्ठ लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ. हंसमुख मेहता, ग्लोबल हॉस्पिटल

ऑपरेशन के लिए संपर्क करें : डॉ. संजय कुमार वर्मा (एम.एस.), वरिष्ठ व अनुभवी सर्जन, ग्लोबल हॉस्पिटल

फोन नं. : (02974) 238347/48/49 फैक्स : 238570

ई-मेल : ghrcabu@gmail.com वेबसाइट : www.ghrc-abu.com

जिसको राखे साँई वो कैसे दुःख पाये ?

• ब्रह्माकुमारी कमला टहलानी, फरीदाबाद

जिन्हें हम चोर या डाकू कहते हैं, वे भी इंसान होते हैं। आत्मा उनके अंदर भी होती है। यह बात अलग है कि कुसंगवश, परिस्थितियों वश आत्मा के मूल गुण - शान्ति, प्रेम, पवित्रता, ज्ञान, शक्ति, ... आदि उनमें सुषुप्त अवस्था में चले जाते हैं परंतु किसी श्रेष्ठ संग को पाते ही वो पुनः जाग भी जाते हैं। परमात्मा का सच्चा परिचय जानकर जब हम मन ही मन उनकी प्यार भरी स्मृति का आनन्द ले रहे होते हैं तो ऐसे प्रकंपन पैदा होते हैं जो हमारे रक्षा-कवच बन जाते हैं और दूसरे के हृदय को भी परिवर्तित करते हैं। क्या ही अच्छा हो कि राजयोग के अभ्यास से हम स्वयं भी निर्भय बनें, रहमदिल बनें और समाज की मुख्य धारा से बाहर निकले लोगों को, पुनः उस धारा में शामिल करने के लिए हिंसा का नहीं बल्कि कर्म के सत्य ज्ञान का और आध्यात्मिकता का सहाय लें - सम्पादक



जिन दिनों हम सीतामढ़ी (बिहार) में रहते थे उन दिनों एक ब्रह्माकुमारी बहन से दस मिनट की ज्ञान-चर्चा के दौरान शिव और शंकर का भेद जानने को मिला। उन्होंने बताया, सदाशिव कल्याणकारी हैं और शंकर जी सूक्ष्म देहधारी हैं; शंकर जी भी शिव की ही आराधना करते हैं। सदाशिव ही परमात्मा, अल्लाह, ईश्वर, गॉड सब कुछ हैं। बस यही बात मेरी समझ में आ गई क्योंकि बहुत सालों से मेरे मन में यह द्वंद्व चलता था कि आखिर इतने भगवान बना दिए हैं, इनमें असली कौन है? अनेक देवताओं की कथाएँ सुनते थे, पढ़ते थे तो पता लगता था कि इन्होंने भी युद्ध किये हैं, हिंसा की है; हिंसा ईश्वर का कर्तव्य तो नहीं हो सकती (ईश्वरीय ज्ञान लेने के बाद अब समझ में आ गया है कि मन की बुराइयों को मारने के सूक्ष्म पुरुषार्थ को, स्थूल और हिंसक युद्ध का रूप देने के कारण यह भ्रांति हुई है)।

ब्रह्माकुमारी बहन की मीठी मुस्कान भरी आँखों ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। धीरे-धीरे मुझे मुरली (ईश्वरीय महावाक्यों) में रस आने लगा। फिर तो वहाँ सेन्टर ही खुल गया।

कुछ महीनों के बाद मैं दिल्ली अपने बेटे को देखने आई और छह-सात दिन के बाद अपने गृहनगर लौटने के लिए पुनः ट्रेन में सवार हुई। गाड़ी जब रात के 12 बजे छपरा पहुँची तो पूरा डिब्बा खाली हो गया। फर्स्ट क्लास की बोगी की चिटकनी टूटी हुई थी। मुझे डर तो लगा क्योंकि मैं अकेली ही बची थी उसमें। इतने में दो डाकू चढ़े बोगी में, कभी इधर गेट से उतरें, दूसरे गेट से आ जायें, बिहार में छपरा और सोनपुर तो डाकुओं का गढ़ है। मैंने बाबा को याद किया, बाबा अब तुम ही बचाना; मेरे पास कुछ बाबा की किताबें थीं, निकाल के बिखरा दीं सीट पर। उनमें से एक आदमी स्प्रिंग वाले छूरे को कभी बंद

करे, कभी खोले। मैंने बाबा का एक मिनट ध्यान किया और कहा, बाबा, अब तुम जानो फिर उसको बोला, बेटे, बैठ जाओ। कुछ कर्मों की गहन गति के बारे में ज्ञान दिया। रत्नाकर डाकू की कहानी भी बताई कि एक महात्मा जा रहा था; डाकू ने उसको पकड़ा, कहा, तुम्हारे पास जो कुछ है, दे दो। महात्मा ने कहा, यह कर्म करके तुम रोज़ी कमाते हो, अपने परिवार से तो पूछो कि क्या वे इस पाप में भागीदार बनेंगे? डाकू उसे बाँध कर अपने परिवार से पूछ कर आया और बोला, मेरा परिवार तो ना कह रहा है। यह सुन महात्मा ने उसे ज्ञान दिया, सत्कर्म का रास्ता बताया। वो डाकू कालांतर में वाल्मीकि बना जिसने पूरी रामायण लिखी। मेरी ये बातें सुन एक डाकू तो प्रभावित हुआ फिर दूसरा भी बैठ गया। ऐसे ही दोनों डाकुओं के बीच मैं अकेली, ईश्वरीय ज्ञान की चर्चा करने लगी। वो दोनों मुझे दीदी-दीदी कहकर कुछ बातें

पूछने लगे। मैंने कहा, सत्कर्म करके रोज़ी कमाने से बच्चे और परिवार सुखी रहते हैं, बुरे कर्म करके धन, बाढ़ के पानी की तरह आता है, फिर सब कुछ बहा कर ले भी जाता है। ऐसे रुपयों का पता ही नहीं चलता कि वे कैसे आये और कैसे गये। इसी बीच सोनपुर स्टेशन आ गया। एक तो चला गया; दूसरा बोला, मैं दीदी को मुजफ्फरपुर छोड़ने जा रहा हूँ। गाड़ी मुजफ्फरपुर सुबह चार बजे पहुँची; मेरा बेटा बैंच पर बैठा मेरी गाड़ी का इंतजार कर रहा था। मैंने कहा, तू क्यों आया, तेरी तो तबीयत ठीक नहीं थी। वह बोला, मैं आपके बिना रह नहीं पा रहा था। मैंने उस आदमी की तरफ इशारा कर कहा, यह मुझे यहाँ तक छोड़ने आया है। उस डाकू ने चाय मँगवायी; दातुन वाले को बुलाकर दो दातुन दिये, फर्स्ट क्लास वेटिंग रूम खुलवा कर मुझे कहा, दीदी, दो घंटे आराम कर फिर बस पकड़ना। फिर राम-राम कहकर जाने लगा और बोला, जब भी आप छपरा आओ, मेरा नाम रामसिंह है, किसी भी कुली को कहना, मैं मिलने आऊँगा। मैंने दिल में सोचा, हे भाई, मेरी जान बची है, यह ही बहुत है। इतने में टी.टी.ई. आया, बोला, माताजी, यह तो छपरा का मशहूर डाकू है। मैंने कहा, आपने तो एक बार भी खबर नहीं ली, मुझे तो बहुत डर लग रहा था। मेरे मन से निकला, 'जिसको राखे साँई, वो कैसे दुःख पाये।' ❖

असली खज़ाना

ब्रह्माकुमारी उमा, चीका (कैथल)

आज का इंसान भौतिक सुखों के पीछे ही भागता रहता है। उनको पाने के लिए कुछ भी कर सकता है। यहाँ तक कि अपना सुख, चैन, शान्ति और आनन्द भी खो बैठता है। उसे बस पैसे कमाने की धुन लगी रहती है। वह धन और स्थूल वस्तुओं को ही खज़ाना समझता है। इन्हें पाकर खुश होता है। अगर ये वस्तुएँ उसे न मिलें तो वह निराश हो जाता है और तनाव में जीता है। उसे लगता है कि इन वस्तुओं के बिना उसका समाज में कोई सम्मान नहीं होगा क्योंकि वह गरीब है। लेकिन क्या वास्तव में सच्चाई यही है? क्या स्थूल वस्तुएँ ही हमारी अमीरी का प्रतीक हैं?

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मेरा भी यही दृष्टिकोण था। यद्यपि मैं चारित्रिक गुणों को भी महत्त्व देती थी, परंतु आज के इस व्यस्त संसार में ज्ञान की ओर ध्यान ही नहीं जाता था। स्थूल वस्तुओं को पाना ही मैं सफलता समझती थी। समय आने पर मुझे जब शिव बाबा का परिचय मिला, तब मेरा दृष्टिकोण भी ज्ञान और अनुभव के आधार पर बदलने लगा। बाबा ने बताया है कि हम आत्माएँ हैं और हमारा असली खज़ाना सुख, शांति, प्रेम, आनन्द और पवित्रता है जो सदा अविनाशी है। इन्हें पाने के लिए हमें कहीं भटकने की ज़रूरत नहीं। सुख, शांति, खुशी और पवित्रता हमारी अपनी संपत्ति है जो हम भगवान की याद से सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। बाबा कहते हैं, कुछ भी हो जाये पर खुशी नहीं जाये। खुशी ही हमारा असली खज़ाना है। इसके बिना हर इंसान गरीब है। एक खुश व्यक्ति ही सुखी और शांत रह सकता है। वह दूसरों को भी अच्छा लगता है। सभी उससे ही बात करना चाहते हैं। कुछ समय के लिए पैसे वाला व्यक्ति सम्मान पा सकता है लेकिन जिसके पास सुख, शांति, पवित्रता और खुशी है, वह व्यक्ति हमेशा सम्मान और प्यार पाता है। पैसे वाले व्यक्ति से तो लोग प्यार का दिखावा करते हैं क्योंकि वह प्यार व्यक्ति से नहीं, उसके पैसे से होता है परन्तु जिसके पास अविनाशी खुशी का खज़ाना है उसे सभी सच्चा प्यार करते हैं।

खुशी पाने की सहज विधि है प्रभु की याद। कितनी सहज विधि है, अविनाशी धन पाने की। आइए, हम सभी भगवान की याद से इस धन को प्राप्त करें और मालामाल हो जाएँ क्योंकि इस धन को प्राप्त करने का यही थोड़ा-सा समय है। फिर न भगवान मिलेंगे और न ही यह धन। ❖

राजयोग अपनाओ, नशों से मुक्ति पाओ

• ब्रह्माकुमार रामकुमार त्यागी, सेवानिवृत्त वारंट ऑफिसर, पानीपत

मैंने लगातार 40 वर्षों तक शराब का सेवन किया। जब से मैंने राजयोग को अपनाया है, परमात्मा शिव के आशीर्वाद से मेरा शराब का नशा छूट गया है। जिसे मैं कठिन कार्य समझता था वह परमात्मा की कृपा से सहज हो गया है। मैं आप सभी को भी यही सलाह देता हूँ कि राजयोग को अपना लो तो नशे से आपकी मुक्ति हो जायेगी। इससे आपके घरेलू झगड़े, आर्थिक तंगी, अशांति आदि सब दूर हो जायेंगे।

भगवान की याद में बहुत बड़ी शक्ति है, 60 वर्ष की उम्र में यह मैं अपने अनुभव से लिख रहा हूँ। मेरा जन्म गाँव बराना, पानीपत (हरियाणा) में एक गरीब किसान के यहाँ हुआ था। गरीबी के कारण मैं पहली कक्षा में 12 वर्ष की उम्र में जा सका लेकिन 6 वर्ष की उम्र में मुझे परमहंस जी का सत्संग सुनने का मौका मिल गया था। मुझे इसमें काफी रुचि थी। मैं उनके बताये रास्ते पर आगे बढ़ता जा रहा था और मेरा हर कार्य आसानी से हो जाता था। बारह वर्ष की उम्र में मेरी ज़िंदगी में नया मोड़ आया और स्कूल जाने का अवसर प्राप्त हुआ। उम्र अधिक होने के कारण, मेरे सहृदय अध्यापकों की कृपा से मैं 5½ वर्ष में दसवीं पास कर गया। यह भक्ति की शक्ति थी।

मैं अब नौकरी की तलाश में था।

एयरफोर्स की भर्ती में मैं बिना सिफारिश और बिना पैसे के चुन लिया गया। मेरे साथ भगवान था जिसका सहारा लेकर मैं वहाँ गया था।

कुछ समय बाद मेरा तबादला आसाम में हुआ। उस समय आसाम का पानी इतना शुद्ध नहीं होता था। इसलिए वहाँ पेट की बीमारी लग गई। मैं तब शराब तो क्या, चाय भी नहीं पीता था। डॉक्टर के पास गया तो उसने कहा, सप्ताह में दो दिन शराब थोड़ी ले लिया करो, फिर ठीक रहोगे। थोड़ी दवाई भी दे दी। दवाई के रूप में प्रारंभ हुई शराब की लत धीरे-धीरे प्रतिदिन की लत में बदल गई। कई लोग तर्क देते हैं कि दवाई के तौर पर शराब के सेवन में क्या खराबी है परंतु मैं अनुभव से कहता हूँ कि बुरी चीज़ तो बुरी ही है। वह अंगुली पकड़कर बाजू तक पहुँचेगी और फिर सारे शरीर को अपनी चपेट में ले लेगी। मेरे साथ ऐसा ही तो हुआ। इसलिए दवाई की आड़ में कोई जीवन बर्बाद न करे। सेवानिवृत्ति के बाद घर आया तो कोई ज़िम्मेवारी तो थी नहीं, इसलिए रात-दिन शराब के नशे में धुत रहने लगा। लेकिन शांति फिर भी नहीं मिली क्योंकि शराब पीने वालों को न घर में सम्मान मिलता है और न ही बाहर। हर आदमी अपना सम्मान तो चाहता ही है। मैं बहुत परेशान था। क्या

करूँ, क्या न करूँ, इस दुविधा में था। शराब मैं छोड़ नहीं पा रहा था। मेरे बच्चे, पोते, पड़ोसी सभी मुझसे घृणा करने लगे।

एक दिन मेरे पड़ोस में सतपाल भाई के मकान की नींव रखी जा रही थी, मैं शराब पीकर वहाँ पहुँच गया। वहाँ मुझे ब्रह्माकुमारी बहन मिली जो नींव रखवाने आई थी। उसने मुझसे कहा, आपने शराब पी है। मैंने हाँ कर दी। उसने कहा, आप तहसील कैम्प आश्रम में आना। मैं उनके दिये समय अनुसार पीकर पहुँच गया। उन्होंने मुझे इस तरीके से समझाया कि मुझे ज़रा भी बुरा नहीं लगा और उनसे वायदा करना पड़ा कि मैं शराब छोड़ दूँगा। फिर मुझे बचपन के संस्कार याद आने लगे कि मैं पहले कितना अच्छा था, अब क्या हो गया हूँ। इस प्रकार मैंने शराब छोड़ दी।

अब मैं बहुत खुश हूँ। रास्ता भटक गया था, अब सही दिशा मिली है। मेरी अब किसी से लड़ाई भी नहीं होती। सभी मुझे मान-सम्मान देने लगे हैं। जो पड़ोसी मुझसे नफरत करते थे वे ही मुझसे प्यार करने लगे हैं और हर कार्य में मुझे साथ रखते हैं। मैं तो कहूँगा, भाइयो, आप भी नशा छोड़कर अपना जीवन सुधारो। शिव बाबा स्वयं आये हैं। यह संगम का समय है। अपनी भलाई कर लो, फिर मौका नहीं है। ब्रह्माकुमारी आश्रम में

सिखाये जाने वाले राजयोग से शैतान से इंसान बनाये जाते हैं। कुछ भाइयों से मेरी मुलाकात होती है। वे कहते हैं, यदि हमें शराब न मिली तो हम मर जायेंगे। परंतु ऐसा कुछ नहीं है, यह एक भ्रम है। शराब छोड़ने से कुछ नहीं होता। इसका ज़रा भी साइड इफेक्ट नहीं है, न ही कोई बीमार होता है। केवल पाँच-दस दिन दिल उचाट रहता है। मुझे बस इतना ही हुआ है। शराब छोड़ने से मुझे बहुत लाभ हुआ। मेरी भूख कम हो गई थी, अब भूख भी सही लगती है। शरीर कमजोर हो गया था, अब सेहत भी ठीक हो गई है। पेट की बीमारी भी ठीक हो गई है। मैं किसी डॉक्टर के पास भी नहीं गया। शराब छोड़ने से सब बीमारियाँ स्वतः ठीक हो गई हैं।

मेरा उदाहरण देकर कुछ लोग दूसरों को जब शिक्षा देते हैं तो मुझे बहुत खुशी होती है। खुशी क्यों न हो, जिसका कोई सम्मान न हो और उसे इतना सम्मान मिलने लगे तो खुशी तो होनी ही है। मैं तो फिर कह रहा हूँ, शिव बाबा आये हैं, उनकी शरण में आओ। बाबा सतयुग लाने वाले हैं। कलियुग जाने वाला है। समय बहुत कम है, इंतज़ार का समय नहीं है। जिसे 21 जन्मों का सुधार करना हो, शिव बाबा की शरण में आ जाओ। अभी समय है, फायदा उठाओ। समय मत गँवाओ, बाबा स्वयं राजयोग सिखाने आये हैं। उनका सहारा लेकर जीवन सफल बनाओ। ❖

पुरानी स्मृतियों की समाप्ति ... पृष्ठ 1 का शेष

बात का ढिंढोरा पीटता फिरगा कि हमने अपनी ग़लती मानी है या मानी थी और माफ़ी माँगी थी। हमें अपने उत्कर्ष के लिए और सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए इस प्रकार के संकोच छोड़ देने चाहिए। फिर भी, यदि कोई व्यक्ति निश्चित रूप से ऐसा है कि वह हमारी 'क्षमा याचना' का अनुचित लाभ लेकर हमारे लिए कार्य कठिन कर देगा तो वाणी में न सही, हाव-भाव तो हमें ऐसा प्रगट करना ही चाहिए कि हम अपनी भूल मानते हैं या अमर्यादा के लिए पछताते हैं।

यदि हम किसी भी ठीक युक्ति से क्षमाभाव प्रगट नहीं करेंगे और प्रायश्चित्त भी नहीं करेंगे तो हमारा मन निर्मल कैसे होगा? विकारों की मैल कैसे छूटेगी? यदि क्षमा करके मन से बोझ नहीं उतारेंगे तो हम उड़ती कला को कैसे प्राप्त करेंगे? हरेक ने ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, शत्रुता, मनमुटाव, स्वार्थ इत्यादि निकृष्ट भावों के वशीभूत होकर दूसरों को हानि पहुँचायी तो है, दुर्व्यवहार किया तो है, उनकी निन्दा-चुगली की तो है, उन्हें पीछे धकेल कर अपने आगे के लिए ज़बरदस्ती स्थान बनाया तो है, दूसरों को उनके उचित अधिकारों से वंचित किया तो है और अन्याय, अभद्रता तथा अनीति का व्यवहार किया तो है। यह सब न सही, आखिर कोई तो बेढंगी चाल चली है। तब क्या किसी दिन क्षमा माँगकर छुट्टी पाने की बजाय हम इस ट्रकभर बोझ को छाती पर लिये रहेंगे? क्या यहाँ ही हल्का होने की बजाय धर्मराज के दण्ड-महादण्ड से प्रचण्ड पीड़ा भोगकर ही हल्के होंगे? इससे तो गधा भला जो 'ढेचूँ-ढेचूँ' कर तुरन्त माफ़ी माँग लेता है या भविष्य में अकर्तव्य न करने की घोषणा करता है। धर्मराज की कचहरी में तो जमानत (bail) होती नहीं कि कोई हमें छुड़ा लायेगा। वहाँ किसी राजनैतिक नेता की सिफारिश भी काम करती नहीं। अतः दूसरों की बुराई मन से भुलाने, अपनी बुराई के प्रति क्षमाभाव प्रगट करने के लिए 'भुलाने और क्षमा करने की शक्ति' को धारण करना चाहिए। यह शक्ति हममें तभी आयेगी जब हम सभी के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखेंगे। उसके बिना यह शक्ति नहीं आयेगी।

यदि क्षमा कहने से मन का कीचड़ धुलता है,
यदि बुराई भुलाने से मन का मैल धुलता है।
तो क्या यह कम है कि ईश्वर का साथ मिलता है,
सबकी दुःआ मिलती है, फूल किस्मत का खिलता है!

आनन्द का छद्म रूप है भौतिक सुख

परमात्मा पिता को सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप कहा गया है अर्थात् वे सत्य हैं, चैतन्य हैं और आनन्द के सागर हैं। परमात्मा की सन्तान होने के नाते आत्मा भी आनन्द स्वरूप है। आनन्द उसका मूल गुण है परन्तु कर्म में प्रवृत्त होने पर अन्य मूल गुणों की तरह, आनन्द में भी कमी आने लगती है। इस कमी को पूर्ण करने के लिए उसे पुनः केन्द्र की ओर, स्वयं की ओर, आत्म-स्वरूप की ओर लौटना होता है। आनन्द का छद्म वेष धारण किए हुए एक दूसरा अहसास है भौतिक सुख। भौतिक सुख, आनन्द नहीं है परन्तु सूक्ष्म जाँच के अभाव में और आनन्द तक पहुँच के अभाव में भौतिक सुख की ओर लपकने की कोशिश की जाती है। परन्तु भौतिक सुख, आनन्द का प्रतिस्थापक नहीं हो सकता क्योंकि आनन्द केन्द्र से, मूल अस्तित्व से (आत्मा से) बहता है। भौतिक सुख रूपी रस केन्द्र से नहीं, परिधि से आता है, अदृश्य से नहीं बल्कि दृश्य से आता है।

भौतिक सुख दीपक की तरह है जिसे प्रतिकूलताओं के तूफान बुझा सकते हैं परन्तु आनन्द वो स्वतः प्रकाशित मणि है जिसे भयंकर से भयंकर झोंका भी बुझा नहीं सकता। भौतिक सुख के दीप जलाने में कई

साधन चाहिए जैसे तेल, दीपक, बाती, दियासलाई परन्तु आनन्द रूपी मणि बिना साधनों के ही प्रकाशित है। भौतिक सुख की प्राप्ति व्यक्तियों और साधनों पर आधारित है जबकि आनन्द निराधार है। एकान्त में, जंगल में, रात्रि में – कहीं भी, कभी भी और कितने भी समय तक आनन्द का अनुभव किया जा सकता है परन्तु भौतिक सुख सीमाओं में बँधा है। जब तक वह वस्तु या व्यक्ति अनुकूल है, भौतिक सुख मिलता रहेगा, उसके प्रतिकूल होते ही जाता रहेगा। आनन्द का संबंध परमात्मा से है, भौतिक सुख का संबंध भौतिक जगत से है। चूँकि आनन्द का कोई अवरोध नहीं इसलिए आनन्द का विपरीतार्थक शब्द नहीं है। भौतिक सुख में अवरोध आते ही दुःख की उत्पत्ति हो जाती है। किसी भी व्यक्ति या वस्तु का प्रथम मिलन सुखदायी नज़र आता है परन्तु शनैःशनैः यह सुख घटना शुरू हो जाता है क्योंकि इस अल्पकालिक सुख के आधार, वस्तु और व्यक्ति भी तो घट-बढ़ रहे हैं। आनन्द कभी घटता नहीं क्योंकि उसका स्रोत परमात्मा सदा एकरस है। यदि उस एकरस से सर्व रस प्राप्त नहीं किए तो मन भौतिक सुख की ओर दौड़ लगाने की चेष्टा करता है।

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

आनन्द आत्मा की स्थायी उपलब्धि है। इसका झरना नित्य, निरंतर, निःशुल्क और निर्बाध है परन्तु भौतिक सुख सरकते हुए संसार में निरन्तर सरकता रहता है।

जो शरीर को आराम पहुँचाता है वह भौतिक सुख है लेकिन आत्मा तक जो पहुँचता है वह आनन्द है। अच्छे घर में रहना, अच्छी कार में बैठना, महंगे वस्त्र पहनना .. ये सब भौतिक सुख के साधन हैं परन्तु सत्य आचरण करके, मन-वचन-कर्म से अहिंसा का पालन करके, निःस्वार्थ प्रेम और परोपकार से जो मिलता है वह आनन्द है। आनन्द की प्यास बुझाने के प्रयास में हम भौतिक सुख बटोरने में लग जाते हैं। भौतिक सुख के साधनों के पीछे हम जितना ज्यादा भागते हैं, वे और आगे खिसक जाते हैं। ऐसा लगता है मानो दूर खड़े होकर हमें चिढ़ा रहे हों। यदि इच्छित भौतिक सुख-साधन हाथ आ भी जाये तो कुछ दिन भोगने के बाद उसका रस फीका लगने लगता है क्योंकि अन्य अप्राप्त भौतिक सुखों की लालसा का पलड़ा भारी होते ही, प्राप्त भौतिक सुख उबाऊ लगने लगता है। दूर की चीज़ का सत्कार और प्राप्त का तिरस्कार – इसी गलत सूत्र का परिणाम है असंतुष्टि,

हताशा और निराशा। कठोर श्रम किया, परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, प्रतियोगिता में सफल रहे, अधिकारी बन गए परन्तु वह पल भी आ गया जब कुर्सी छोड़नी पड़ी। पहले लोगों से नज़र बचाते थे, आज लोग हमसे नज़र बचाने लगे हैं। भौतिक सुख का पंछी पंख समेटकर उड़ गया। कारण यह है कि नाम, मान, पद और पैसे के जिस नश्वर सुख से जीवन-गाड़ी ठेली जा रही थी, उसके समाप्त होते ही वह निराशा में धंस गई। भौतिक सुख में रहते-रहते यदि आनन्द की अनुभूति भी कर ली जाती तो आज भौतिक सुख के पंछी के पंख समेट लेने पर भी हम आनन्द के सागर में गोता लगा रहे होते। भौतिक सुख छिन गया, छिनना ही था, कोई बात नहीं पर आनन्द को तो कोई नहीं छिन सकता। भूल यह हुई कि भौतिक सुख तो कमाया पर आनन्द नहीं कमा सके।

व्यापार में धन कमाया, साधन एकत्रित किए लेकिन परिवर्तन तो नित्य है। आ गई काली छाया, लग गया घाटा, पड़ गया छापा, अब ए.सी. में बैठे भी जीवन तप रहा है। इन सबका कारण क्या है? कारण है आत्म-स्वरूप से तादात्म्य न होना। जैसे जड़ों के मजबूत होने से पेड़ हर प्राकृतिक तूफान को सह जाता है। जड़ें मजबूत न हों तो उखाड़ने के

लिए एक ही झोंका काफी है। हम हवा से नहीं कह सकते कि तुम पेड़ को मत हिलाओ। इसी प्रकार हम परिस्थितियों को नहीं कह सकते कि तुम मत आओ। वे तो आएंगी, तीव्रवेगी होकर आएंगी परन्तु हमें आत्मस्थिति और परमात्म चिन्तन जैसी जड़ों को मजबूत बनाना है।

मृत्युपाश ने किसी प्रियजन को अलग कर दिया तो मन किसी और में लगा लेंगे। संतान चली गई तो दूसरी को जन्म देंगे, कुर्सी से नीचे गिरा दिए गए तो दूसरी कुर्सी तलाश लेंगे, उजड़े व्यापार को पुनः जमा लेंगे, इस प्रकार भौतिक सुख को पुनः पा लेंगे। पुनः पा लेंगे, वो तो ठीक है परन्तु गए हुए का दुःख सालता तो रहेगा। नए को पाकर भी, खोए हुए के दर्द की टीस उठती तो रहती है। यह टीस तब मिटेगी जब ईश्वरीय ज्ञान और ईश्वरीय स्मृति का उस पर लेप करेंगे। एक भौतिक सुख के छिन जाने पर हम दूसरे भौतिक सुख से उसे प्रतिस्थापन करने की कोशिश करते हैं। भौतिक सुख के किसी आधार के छिन जाने पर जो स्थान रिक्त हुआ है, वहाँ परमात्मा को रख देंगे तो दुख की शाश्वत भरपाई हो जायेगी। परमात्मा को ना रखकर, वैसी ही किसी चीज़ से उसको भरने का प्रयास किया तो पहले वाली की याद सताती रहेगी। अतः चाहे संबंध

के कारण स्थान रिक्त हुआ या संपत्ति और साधन के कारण, वहाँ परमात्मा को साथी बनाकर रिक्तता को भरिए। परमात्मा के सान्निध्य से जो चिर तृप्ति मिलेगी उससे गई हुई चीज़ का दुख सतायेगा नहीं, बल्कि उसका जाना कल्याणकारी लगेगा क्योंकि उसी की बदौलत तो परमात्मा का प्यार मिला।

एक बार एक देहधारी गुरु के पास एक माता यह दुख लेकर गई कि उसका इकलौता पुत्र हवाई दुर्घटना में मारा गया, उसकी गोद खाली हो गई है। महात्मा जी ने बड़े करुणा भाव से उसे निहारा और फिर कहा, माता, मुझे अपना पुत्र बना ले। एक देहधारी महात्मा ने भी उसे दूसरा पुत्र लेने की बात नहीं कही क्योंकि, एक तो, एक के अभाव को दूसरा भर नहीं सकता। पहले की याद तो फिर भी आती रहेगी। दूसरा, इस हादसे के संसार में दूसरे के साथ भी इस प्रकार का हादसा हो गया तो दुख दुगना हो जायेगा इसलिए रिक्त स्थान को परमात्मा की याद से भरिए। परमात्मा पिता तो कहते हैं, जहाँ-जहाँ तुम्हारा बुद्धियोग उलझता है, वहाँ-वहाँ मुझे भी ले चलो क्योंकि मैं हर उलझन को सुलझाने वाला हूँ। जहाँ मैं हूँ अर्थात् मेरी स्मृति है वहाँ उलझन, भटकन, चंचलता, अस्थिरता, विकारी संस्कार, विकारी स्मृति, विकारी दृष्टि-वृत्ति रह ही नहीं

सकती। अतः पति का अभाव है तो परमपति परमात्मा से उसे भरिए, पुत्र का अभाव है तो परम पावन परमात्मा को पुत्र भाव से स्मरण कीजिए, धन की कमी है तो ईश्वरीय ज्ञान रूपी धन की ओर मुख कर लीजिए। सर्व अभावों को भरने वाला परम खजाना है परमात्मा।

जड़ से कटा पेड़ सूख जाता है और आत्म-स्वरूप से कटे मानव का वर्तमान, भविष्य निराधार हो जाता है। यदि पतंग डोरी से टूट जाये तो उसके पास भटकने के सिवाय बचता ही क्या है? आत्म-अनुभूति और परमात्म-अनुभूति से कटा हुआ मन भी भटकने के सिवाय कहाँ ठिकाना पाए? भले ही आकाश-पाताल को हमने नाप लिया पर स्वयं के अन्तर में हमारा प्रवेश नहीं है। अन्तरात्मा के ज्ञान की गहराई से हम अछूते हैं। आनन्द का झरना अंदर बह रहा है और खोज बाहर जारी है। भौतिक सुख तो ऐसा है कि एक स्थिति उसे ले आई और दूसरी उसे छीन ले गई परन्तु आनन्द नित्य है, उसे कोई छीन ही नहीं सकता, जब तक कि हम स्वयं उसे ना छोड़ दें। अतः भौतिक सुख की मृगमरीचिका में न उलझ शाश्वत आनन्द को जीवन का ध्येय बनाइये। अपने स्वरूप से कभी मत कटिए, आनन्द का प्रवाह भी कभी नहीं रुकेगा। ❖

अशान्ति से ॐ शान्ति तक

ब्रह्माकुमार विजयराव, हैदराबाद

गाँव के एक मध्यमवर्गीय परिवार का एक व्यक्ति बहुत अशांत रहता था यद्यपि उसका कारोबार अच्छा था। अशांति के समाधान के लिए सगे-संबंधियों से, यार-दोस्तों से, बड़े बुजुर्गों से जो भी सलाह मिली, उसने करके देखी परंतु कुछ भी राहत नहीं मिली। एक दिन एक मित्र ने कहा, गाँव के बाहर जो आश्रम है वहाँ एक बाबा आया है, शायद उससे समाधान मिल जाये। यह सुनते ही वह व्यक्ति तुरंत उसके पास गया। उसने बाबा के सामने अपनी समस्या रखी। बाबा ने कहा, यह तो बहुत ही छोटी-सी बात है। इस अशान्त शब्द में जो 'अ' शब्द है वह अपने मन से निकाल दो तो शेष शांत रह जायेगा, वही तो तुम हो, तुम शांत स्वरूप आत्मा हो। वह खुशी-खुशी घर वापस आया और मन से 'अ' शब्द निकालने की कोशिश करने लगा परंतु बहुत दिनों के प्रयास के बाद भी वह उस 'अ' शब्द को न निकाल सका।

एक दिन घर से बाहर टहलने निकला तो उसकी निगाह किसी घर पर लहराते हुए झण्डे पर गई और साथ में ही एक बोर्ड भी दिखाई दिया जिस पर लिखा था – मानसिक शान्ति के लिए राजयोग, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। उस व्यक्ति की इच्छा हुई कि क्यों ना अंदर जा कर पूछूँ। जैसे ही वह अंदर गया, अंदर के वातावरण से उसे लगा कि यहाँ तो दुनिया से निराली शान्ति है। थोड़ी देर बैठने के बाद उसने अपनी समस्या निमित्त बहन को सुनाई। निमित्त बहन ने कहा, तुमको कुछ निकालना अर्थात् छोड़ना नहीं है। हाँ, तुमको लेना अवश्य है। उसने पूछा, क्या लेना है? बहन ने कहा, 'अ' के स्थान पर 'ॐ' लेना है। अब वह भाई अशान्ति-अशान्ति के स्थान पर ॐ शान्ति, ॐ शान्ति करने लगा। उसको समाधान मिल गया। फिर उसने सात दिन का कोर्स कर, प्रतिदिन ईश्वरीय महावाक्यों का श्रवण, मनन कर 'ॐ शान्ति' को तन-मन में रचा-बसा लिया अर्थात् 'मैं शांतस्वरूप आत्मा हूँ' इस स्वमान में टिक गया। उस भाई ने शिवबाबा का लाख-लाख शुक्रिया किया और बहन का भी बहुत-बहुत धन्यवाद किया। ❖

सादगी

सादगी अर्थात् निर्मल-स्वच्छ व्यक्तित्व, प्रशांत मन, दिव्य-सात्विक बुद्धि व इंद्रियों के संयम का संस्कार। सादगी, गुण रूपी फूलों का ऐसा गुलदस्ता है जिसकी भीनी-भीनी खुशबू सब को आकर्षित करती रहती है। सादगी में अनेक गुण समाये रहते हैं जैसे कि नम्रता, दया, सरलता, मितव्ययता, समर्पण, शालीनता, निरहंकारिता, सत्यता, एकांतप्रियता, न्यारापना, अनासक्ति, अहिंसा इत्यादि। सादा व्यक्ति स्वभाव से सहज, सरल, सजग होता है। कई मनुष्य वाचा की चपलता से प्रभाव डालने का प्रयास करते हैं परंतु सादगी वाला मनुष्य अपने शांत, सरल आचरण से प्रभाव छोड़ता है। उसका विवेक कभी मुग्ध नहीं होता और परिस्थितिवश कभी क्षुब्ध भी नहीं होता। अनुकूलता-प्रतिकूलता, दोनों में वह संयमित रहता है। उसका संयमित जीवन आरोग्यता और योग्यता लाता है। वह अपने जीवन में सिद्धांत और साधना का संतुलन रखता है। वह ना तो सिद्धांत से समझौता करता है और ना ही साधना को साधनों पर आश्रित करता है। जीवन में यदि सादगी न हो तो साधना या तपस्या हो नहीं सकती। तपस्या के लिये इच्छाओं को कम एवं शुद्ध करना ज़रूरी है ताकि तन्मयता-एकाग्रता आये।

सादगी अर्थात् लक्ष्य की प्राप्ति का

मानसिक वातावरण। धनाढ्य का बच्चा भी छात्र जीवन में सादगी से पढ़ता है। छात्रों को, वैज्ञानिकों को, तपस्वियों को अपने-अपने मार्ग में सफलता प्राप्त करने के लिये सादगी अपनानी पड़ती है। सादगी परमात्मा के निकट रखती है, दीर्घायु-चिरायु बनाती है, सद्भावना पैदा करती है और जीवन में सुख-शांति लाती है। जहाँ 'सभ्यता' मनुष्य कहलाने की पहली शर्त है, वहाँ 'सादगी' योगी-तपस्वी कहलाने की पहली शर्त है।

जीवन में सादगी अन्नदोष व संगदोष से भी बचाती है। सादगी और विनम्रता से मनुष्य महानता को प्राप्त करता है। जहाँ सादगी है वहाँ विनम्रता भी होगी परन्तु विनम्रता सादगी के बिना भी हो सकती है। विनम्रता मौके प्रमाण भी हो सकती है और संस्कार प्रमाण भी। महात्मा गांधी, मदर टेरेसा, विनोबा भावे आदि विनम्रता व सादगी के उदाहरण हैं। महात्मा गांधी ने मात्र सत्याग्रह द्वारा अंग्रेजों से लोहा नहीं लिया बल्कि सादगी और विनम्रता की शक्ति द्वारा उन्हें नतमस्तक किया। एक बार जब गांधी जी पानी के जहाज से इंग्लैण्ड जा रहे थे तो एक अंग्रेज भाई ने कागज़ों पर काफ़ी अपशब्द लिख कर गांधी जी को पढ़ने के लिये दिये। गांधी जी ने विनम्रता से कागज़ ग्रहण किये, उनमें लगी आलपिन

• ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

निकाल ली और कागज़ अंग्रेज भाई को वापस लौटा दिए। पूछने पर गांधी जी ने कहा कि मैंने काम की चीज़ संभाल कर रख ली है, उसके लिए आपका धन्यवाद। ऐसे ही जब लार्ड माउण्टबेटन ने उन्हें पहली बार दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया तो गांधी जी अपने साथ बकरी के दूध की दही व ऐसी चम्मच ले कर गये जिसकी टूटी डण्डी की जगह बांस की छोटी-सी खपच्ची बंधी थी। गांधी जी ने निःसंकोच उस चम्मच का उपयोग किया। इस तरह की सादगी ने माउण्टबेटन को अचंभित ही नहीं बल्कि नतमस्तक व मुग्ध भी किया।

भारत ऋषि-मुनियों की भूमि है। ऋषि-मुनियों का वास जंगलों-पहाड़ों अर्थात् प्रकृति की गोद में हुआ करता था। सादगी की शक्ति उन्हें वहाँ खींच ले जाती थी और तपस्या हेतु अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराती थी। परंतु आज सादगी के अभाव ने उन्हें शहरों में पहुँचाना शुरू कर दिया है। जिस सादगी का विस्तार पहले कश्मीर से कन्याकुमारी तक देखने को मिलता था, वह सादगी अब ऐसे गायब होती जा रही है जैसे भूमि से हरियाली (Deforestation)। इस कलियुग में सादगी अंतिम सांस लेती दिखाई दे रही है।

यह एक दैवी विधान है कि जो भी मनुष्य किसी अन्य मनुष्य या भौतिक

संपदा से दिल लगायेगा, उसे तकलीफ उठानी पड़ेगी। सादगी पसंद मनुष्य, संबंधों को व साधनों को साक्षी भाव से बरतता है और उनसे बिछोह होने पर विचलित नहीं होता है। सादगी वाले मनुष्य को भी, पूर्व जन्म के विकर्म के कारण तकलीफ या परिस्थिति का सामना करना पड़ सकता है परंतु यदि वह सादगी संपन्न होते हुए एक योगी तपस्वी भी है तो परिस्थिति के आने पर वह 'परी-स्थिति' अर्थात् फरिश्ते की स्थिति धारण कर उस से ऊपर उड़ निकलता है। परिस्थिति नीचे और वह ऊपर। जैसे-जैसे जीवन में सादगी आती है, वैसे-वैसे देह व देह के पदार्थों का भान कम होता जाता है। सादगी की सर्वोच्च स्थिति है 'आत्मानुभूति'।

एक आध्यात्मिक पुरुषार्थी के जीवन में सादगी नितांत आवश्यक है। सादगी दो तरह की हो सकती है –

1. बाहर से धारण की गई। यह एक ऐसी ढीली टोपी के समान है जो परिस्थितियों की हल्की-सी हवा से भी उड़ कर दूर जा गिरती है।
2. दूसरी प्रकार की सादगी है, अच्छी तरह बँधे हुए मुकुट के समान। यह संस्कार रूप में अंदर, स्वाभाविक रूप में धारण होती है। यह 'संस्कार रूप सादगी' ही पुरुषार्थ में खुशबू व शक्ति भरती है और लक्ष्य प्राप्त कराती है। परंतु ऐसी सादगी या तो पारिवारिक माहौल से विरासत में मिलती है या फिर जीवन में घटी किसी

अभूतपूर्व घटना से अकस्मात् प्राप्त हो जाती है। सम्राट अशोक के मन को कलिंग के युद्ध ने ऐसा झँझोड़ा था कि उनके वैभव व अभिमान का स्थान सादगी ने ले लिया। इस सादगी ने ही उन्हें ऐतिहासिक सम्मान व गौरव दिलाया।

प्रवृत्ति में रहते 'संस्कार रूप सादगी' श्रेष्ठ कर्म कराती है और गीता में उल्लिखित 'कर्मयोग' की स्थिति के अनुरूप आदर्श जीवन प्रदान करती है। यह स्थिति पराकाष्ठा में आ कर 'विदेही' या 'जीवनमुक्त' स्थिति का अनुभव कराती है, जिसकी मिसाल राजा जनक थे। वे महलों में रहते हुए, अपनी प्रजा के प्रति सारे दायित्वों का निर्वाह करते हुए भी पूर्णतः जीवनमुक्त थे। उनकी स्थिति 'विदेही' थी अर्थात् आत्मा देह में रहते हुए भी देह के भान से परे थी क्योंकि आत्मा में देह और देह के संबंधों से पूरा वैराग्य था और देही (आत्मा) अभिमानी स्थिति अनुभव में आ गई थी। जहाँ सादगी है वहाँ सच्चाई, अहिंसा व दया उसका अनुकरण करती हैं।

1. सच्चाई – सच्चाई ही आत्मा को ऊँचाई प्राप्त कराती है। कहा भी गया है, 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की जीत होती है लेकिन सत्यता का दामन वही थाम सकता है जिसने विकराल 'अहं' को मार कर वामन रूप धारण किया हो। एक झूठा मनुष्य सादगी पसंद हो, यह हो नहीं सकता। सादगी अर्थात् जैसा अंदर से, वैसा बाहर से।

2. अहिंसा – अहिंसा व ब्रह्मचर्य का पालन सर्वदा व सर्व के प्रति किया जा सकता है परंतु हिंसा व कामाचार सर्वदा व सर्व के प्रति नहीं किया जा सकता। अतः अहिंसा व ब्रह्मचर्य सनातन हैं और हिंसा व कामाचार आगंतुक। अहिंसा अर्थात् अन्तर्मन में संकल्प चलें, विकल्प नहीं। वाणी में ऐसी मधुरता हो जो सुनने वाले के अंदर की अशांति की लहरें शांत हो जाएं और कर्म ऐसे हों जो किसी को दुख व पीड़ा न पहुँचायें बल्कि अनुकरणीय हों। दृष्टि व दृष्टिकोण में पवित्रता ही क्रमशः 'काम-कटारी' व 'कान-कटारी' की हिंसा को रोक सकती है।

3. दया – कहा जाता है, 'दया सर्वभूतेषु'। यदि किसी की मनुष्यों के प्रति तो दया हो और पशुओं के प्रति क्रूरता हो तो वह दया नहीं है। अगर कोई मनुष्य दिखने में तो बड़ा दयावान है परंतु मांसाहारी है तो उसमें स्वाभाविक दया हो नहीं सकती। स्वाभाविक-आंतरिक दया, अनुकंपा, करुणा या अनुग्रह का भाव ही जीवन में सादगी व आत्मा में सात्विकता लाता है। भगवान किसी पर कृपा नहीं करते क्योंकि उनको सभी एक-समान प्रिय हैं। यह बात अलग है कि उनकी श्रीमत पर चलने वाला उनके अधिक करीब हो जाता है। 'कृपा' का अर्थ है – कृत पा अर्थात् जैसा कर्म किया वैसा फल पा।

वैसे तो इतिहास में सादगी की अनेक मिसालें मिलती हैं परन्तु दादा

लेखराज की सादगी बेमिसाल थी। उनका जन्म सन् 1876 में सिंध के एक कृपलानी कुल में, वल्लभाचारी भक्त के यहाँ हुआ था। उन्हें जन्म से ही सादगी, संस्कार रूप में मिली थी। अखुट धन-संपदा के स्वामी होते हुए भी उनमें भव्यता और दिव्यता का अनूठा संगम था। उनकी सादगी, प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में उनका अलौकिक जन्म होने में सबसे बड़ी योग्यता थी। शिव परमात्मा ने, उनको निमित्त बनाकर सतयुगी सृष्टि की रचना का जो कार्य सन् 1937 में शुरू किया, वह आज विश्वव्यापी रूप केवल इसलिये ले पाया क्योंकि इस ईश्वरीय कार्य से जुड़े हर पुरुषार्थी को पहले सादगी का पाठ पढ़ाया गया है। 'अपने को आत्मा समझो, शरीर नहीं', 'पवित्र बनो, योगी बनो' जैसी श्रीमत ब्रह्मा बाबा ने मात्र मुख से सुनाई ही नहीं बल्कि अपने कर्म व आचरण से दिखाई भी।

सादगी संपन्न आत्मा की यह पहचान है कि वह शांत होगी, कल्याणकारी होगी, नाम-मान-शान की चाहना से परे होगी, अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होगी, अवहेलना व ग्लानि से क्षुब्ध नहीं होगी, आडंबर से मुक्त होगी। ऐसी मुक्त आत्मा अपने सात दिव्य मौलिक गुणों (ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख, आनन्द व शक्ति) को शुद्धता से प्रकट कर सकती है। सादगी अर्थात् आत्मा व्यर्थ बातों की स्मृति और दूषित संस्कारों आदि से मुक्त है। ऐसी

आत्मा की बुद्धि में ज्ञान ठहरता है, मन में शांति ठहरती है और संस्कारों में पवित्रता, शीतलता आती है। उसकी कर्मेन्द्रियाँ शीतल होती जाती हैं। ज्ञान, पवित्रता व शांति से संपन्न आत्मा फिर अन्य आत्माओं से प्रेम का रिश्ता जोड़ पाती है। इससे संबंध, संपर्क सुखदायी बनते हैं अर्थात् आत्मा दूसरों को प्रेम देती है और बदले में प्रेम पाती है। जब आदान-प्रदान प्रेम का होता है तो प्रतिक्रिया स्वरूप दोनों को सुख की अनुभूति होती है। यह प्रेम और सुख की अनुभूति 'घटना रूप' में स्मृति में दर्ज हो जाती है। ऐसी प्रेम व सुख की अनेक घटनायें भविष्य में जब सार रूप में या भाव रूप में आत्मा पर प्रभाव छोड़ती हैं तो आत्मा आनन्द का अनुभव करती है। जब आत्मा में ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, सुख व आनन्द, ये छह गुण स्वाभाविक रूप में स्वतः कार्यरत हो जाते हैं तो आत्मा पर एक शक्ति का प्रभामण्डल छा जाता है। ऐसे में यदि कोई विघ्न, परिस्थिति या मायावी शक्ति आक्रमण करती है तो यह शक्ति का प्रभामण्डल उसे सहज निष्फल कर देता है।

प्रश्न है कि क्या सादगी को कायम रखने हेतु भौतिक संपदा को त्यागना होगा? नहीं, ऐसा नहीं है। पहले यथार्थ भौतिक संपदा के स्वरूप पर नज़र डालें। हर जीवात्मा का उसका खुद का शरीर उसकी पहली भौतिक संपदा है। आत्मा को रहना शरीर रूपी

वस्त्र में है परंतु इस वस्त्र से मोह-लगाव आदि नहीं रखना है। न तो स्वयं के भौतिक, नाशवान, शारीरिक वस्त्र के अभिमान में फँसना है और ना ही किसी अन्य के ऐसे ही वस्त्र में फँसना है। शरीर को आत्मा की कुटिया या मकान समझना है।

दूसरी भौतिक संपदा है मकान या सामूहिक निवास स्थल। यह मकान पाँच तत्वों की एक जड़ संरचना है परंतु इससे 'मेरा मकान' वाली भावना का त्याग कर सेवार्थ साधन मानकर रहना है।

तीसरी भौतिक संपदा है रुपया, पैसा, ज़ेवरात आदि। यह विचारणीय बात है कि ज़रूरत से ज्यादा पैसा, बैंक में ही आजीवन पड़ा रहता है। मनुष्य इस मोटी रकम को कल्पना में देख-देख खुश होता रहता है। उसकी आवश्यकताएँ तो थोड़े से धन से पूरी हो जाती हैं परंतु सद्विवेक के अभाव में वह अखुट संपदा के कारण उलटे-सुलटे कर्मों का खाता बना बैठता है। ऐसे कर्मों को उसे भविष्य में कूटना या भोगना पड़ता है परंतु, एक सादगी संपन्न योगी 'अखुट संपदा' के बजाय परमपिता परमात्मा के सान्निध्य की 'अटूट संपदा' का भरपूर लाभ लेता है। उसका मन 'मनमनाभव' स्वरूप, मति 'श्रीमत' स्वरूप और संस्कार (स्मृति) 'सादगी' स्वरूप हो कर आत्मा को संपूर्णता की अनुभूति कराते हैं। उसकी आत्मा में भाव रूप में एक ही अनहद नाद गूँजता है – 'पाना था सो पालिया'। ❖

प्राकृतिक प्रदूषण का कारण मानसिक प्रदूषण

• ब्रह्माकुमारी निर्मला, शुजालपुर मंडी

आज संपूर्ण विश्व की स्थिति भयावह होती जा रही है अतः परिवर्तन ज़रूरी है। जल, वायु और अग्नि के बढ़ते प्रदूषण ने इस जीव जगत में प्राणियों के लिए खतरा पैदा कर दिया है। संपूर्ण मानव जाति के विनाश के निमित्त पर्यावरण प्रदूषण का राक्षस मुँह फैलाए खड़ा है। पृथ्वी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में होने वाला अवांछनीय परिवर्तन ही प्रदूषण है जो विकृति को जन्म देता है। यह विकृति ही पदार्थों और तत्वों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से दूषित बनाकर प्राणीमात्र के जीवन एवं संसाधनों पर बुरा असर डालती है। वर्तमान में बढ़ती हुई जनसंख्या और अधिक धन कमाने की चाह ने मनुष्य की सीरत ही बदल दी है। वह प्रकृति का और प्राकृतिक संपदाओं का अविवेकपूर्ण रूप से दोहन कर रहा है। तेजी से बढ़ते औद्योगीकरण ने गाँव-गाँव में कल-कारखानों का निर्माण किया है। उनमें से निकलने वाले सड़े-गले पदार्थ, रासायनिक तत्व और विषैला धुआँ सभी मिलकर प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे हैं। नदियों और सरोवरों का पानी भूगर्भ में समाता जा रहा है और जो बचा है वह पीने लायक नहीं रहा। मानव के हाथों प्रकृति के आंचल को गंदा होते देख

किसी ने ठीक ही कहा है –

*आग लेकर हाथ में
पगले जलाता है किसे
जब ना ये बस्ती रहेगी
तू कहाँ रह जायेगा।*

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश का गहरा संबंध मनुष्य की पाँचों कर्मेन्द्रियों के साथ जुड़ा है। आँख दृश्य शक्ति, कान श्राव्य शक्ति, नाक घ्राण शक्ति, जिह्वा स्वाद शक्ति और त्वचा स्पर्श शक्ति, ये सब शक्तियाँ प्रदूषण के कारण दिन-ब-दिन निष्क्रिय होती जा रही हैं। अनेकानेक बीमारियों का जन्मदाता यह प्रदूषण का सर्प ही है जिसने मानव मात्र के दिलों में विष घोल दिया है। आत्ममंथन करके देखें तो इन सभी क्रियाओं के पीछे मन के भीतर उठने वाले नकारात्मक संकल्पों का ही दुष्प्रभाव है। ईर्ष्या, द्वेष और लालच ने तो मनुष्य को इतना नीचे गिरा दिया है कि आज एक भाई भी अपने भाई के खून का प्यासा हो गया है। जहाँ आये दिन हत्या, लूटमार, चोरी, डकैती जैसे दुष्कर्मों का मायाजाल हो वहाँ सुखमय वातावरण की कल्पना भी कैसे की जा सकती है? अतः समस्या के निवारण हेतु हमें सृष्टि के प्रारंभिक काल की ओर जाना होगा जिसके बारे में गायन है कि यमुना का पवित्र किनारा,

चंदन-सी महक वाला शीतल, स्वच्छ, खुशबूदार जल, जहाँ बैठकर श्री कृष्ण सुख-चैन की बंसी बजाया करते थे और सखियाँ महारास में सुध-बुध भूलकर दिव्य शक्तियों से भरपूर देवी-देवताओं-सा जीवन जीती थी। हरित दूर्वा से आच्छादित धरती, सुन्दर उपवन, फल और फूलों से लदे वृक्ष, चारों ओर स्वच्छता ही स्वच्छता, ना आग, ना धुएँ की कड़वाहट – ये नज़ारे थे आदिकालीन भारत भूमि के।

लेकिन शनैःशनैः दैवी सृष्टि का महकता-दहकता यौवन प्रदूषणग्रस्त हो गया। रामराज्य पर रावण-राज्य का साया मंडराने लगा। व्यक्तिगत स्वार्थ इतना बढ़ा कि प्रत्येक मनुष्य में 'मैं और मेरा' ही समा गया। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या-द्वेष, भय – ये सब दुर्गुण मनुष्य के सिर चढ़कर बोलने लगे। मनुष्य यह सत्य भूल गया कि –

*प्यार की धरती
अगर बन्दूक से बाँटी गई
एक मुर्दा ही शहर
अपने दरम्यां रह जायेगा।*

अति काम-वासना, जनसंख्या वृद्धि का कारण बन गई। धीरे-धीरे सारा संसार ही रहने के लिये छोटा पड़ गया और मनुष्य कीड़ों की तरह रेंगने लगे। आज विकारों रूपी राक्षस ने

सारी सृष्टि को अपने पंजे में जकड़ रखा है। यह सब देखते, जानते भी मनुष्य कुंभकरण की नींद सोया पड़ा है। परमात्म अवतरण का आभास वह कर नहीं पा रहा है। सद्विचारों के तिनके यदि उसके कान में घुमाये भी जायें तो 'अभी मेरी उम्र ही क्या है? समय आने पर मैं सब-कुछ कर लूंगा' ऐसा सोचकर वह पुनः करवट बदलकर सो जाता है। अतः अब समय की पुकार है – मानव जागो! श्रेष्ठ शिक्षाओं की अवहेलना मत करो। विनाश की बातों को साधारणता में मत लो वरना एक दिन सचमुच शेर आ जायेगा और आप देखते, हाथ मलते, हाय-हाय करते रह जाओगे। निराकार परमपिता, परमशिक्षक, परमसतगुरु परमात्मा भी हमें जागृत कर रहे हैं। प्रदूषण के राक्षस को मारने की योजनायें हमें स्वतः ही बनानी होंगी। सर्वप्रथम तो जनसंख्या वृद्धि से निजात पाने के लिये गीता में वर्णित 'काम महाशत्रु है', 'काम जीते जगतजीत' जैसे शब्दों की सिर्फ माला फेरते रहने की बजाय उन पर अमल करना होगा। मंदिरों में जाकर देवी-देवताओं के गुणों की खूब महिमा करते हैं लेकिन क्या उन्हीं गुणों को स्वयं में धारण नहीं कर सकते? मन के अंदर तेजी से उठते अवांछनीय, अशुद्ध, अकल्याणकारी संकल्पों को उठने ही ना दें। उनकी

जगह शुद्ध-सात्विक संकल्पों में रमण करेंगे तो निश्चित ही वातावरण खुशहाल बनेगा। इसके लिये नियमित एकाग्रता और योगाभ्यास की बहुत आवश्यकता है। प्रत्येक मनुष्य जानता है कि मुझे क्या साथ लेकर जाना है? फिर इतनी भागमभाग क्यों? अपने जीवन की बगिया को दिव्य गुणों के फूलों की खुशबू से इतना महका लो कि जो भी आपके संपर्क में आये उसका स्वयं का जीवन भी महकने

लग जाये। एक महत्त्वपूर्ण दृढ़ संकल्प सारे पर्यावरण की बदबू को मिनटों में खत्म करने में सहायक होगा। किसी ने ठीक ही कहा है –

जंगलों को नहीं,
जंगलीपान को स्वत्म करो,
पशुओं को नहीं,
पशुता को स्वत्म करो।
आपने ही पैरों पर
कुल्हाड़ी मारने वालो,
जीवनदायी पर्यावरण को
आपने श्रेष्ठ संकल्पों से शुद्ध करो।



नवजीवन दिला दो

डॉ. राजेन्द्र नाथ शर्मा, अंबाला कैंट



प्रकृति की बढ़ने लगी थकान, उठने लगा है अब तूफान अस्पष्ट आवाज़ें हैं आने लगा, जीवन को हैं खाने लगी पोषक तत्व इसके हैं घट रहे, प्रतिदिन उपद्रव जो बढ़ रहे हे दुनिया में रहने वालो, बीमार प्रकृति को संभालो प्रकृति को खिलाकर विटामिन, थकान इसकी दूर भगा दो सूख गया है रिशतों का पानी, सहयोग की सिंचाई करा दो दुख-दर्द इसके हैं बढ़ रहे, सुख-शान्ति की दवाई पिला दो चर्म रोग भी बढ़ रहे हैं, आनन्द का उन पर लेप लगा दो आतंकवाद आज है बढ़ रहा, अहिंसा का पाठ पढ़ा दो जन-जन में उपजी कड़वाहट, बस थोड़ा ज्ञान-पान करा दो गुनाहों का कोहरा है फैल गया, सद्ज्ञान से इसे हटा दो दूषित हो गया है वातावरण, शुभ भावना से स्वच्छ बना दो जीर्ण हो गए इसके वसन, सुन्दर हरी साड़ी इसे पहना दो शिथिल हो गया इसका शरीर, बलवर्धक रसायन पिला दो प्रकृति तो है हम सब की, फिर से इसे नवजीवन दिला दो

एक घटना मेरे अलौकिक जन्म की

• ब्रह्माकुमारी ऊषा, मधुबन

उन दिनों हम अफ्रीका में रह रहे थे। जब ब्रह्माकुमारीज के भाई-बहनें हमारे पास आये एवं ज्ञान सुनाया तो हमने सुना परंतु कुछ समझ में नहीं आया, न ही इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा हुई। एक सतगुरुवार के दिन जब वृक्षपति पिता परमात्मा को भोग अर्पित किया जा रहा था तब हम भी राजयोग-कक्षा में शामिल हो गये। राजयोग शिक्षिका बहन जी ध्यानावस्था में बाबा के पास भोग लेकर गई, उन्होंने जो दृश्य ऊपर देखा वह हमें नीचे बैठे खुली आँखों से अनुभव हुआ। मैंने समझा, यही योग में सभी को दिखाई पड़ता होगा। बाद में बहन जी ध्यान का संदेश सुनाने लगी तो मुझे लगा, जब सभी ने यही देखा है तो फिर यों सुनाने की क्या आवश्यकता है। जब सभी चले गये तो मैंने अपनी माता जी से पूछा, आप योग में क्या देखती हैं? उन्होंने कहा— हम कुछ देखते ही नहीं हैं, हम तो शिव बाबा को याद करते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कहा, जो बहन जी सुना रही थी ठीक वैसा ही मैंने योगावस्था में देखा परंतु इतना स्पष्ट समझ में नहीं आया। जब बहन जी से इस बारे में बात की तो उन्होंने कहा, यह तो बाबा की देन है और यह दिव्य दृष्टि की देन सभी को नहीं मिल सकती है, बाबा जिसको अनुभव

कराना चाहे, उसे यह अनुभव प्राप्त होता है। बाद में मैं उस दृश्य को भूल गई पर अनुभव की छाप मन पर गहरा प्रभाव छोड़ गई। इस अनुभव के बाद ज्ञान समझने के लिए रुचि बढ़ी और मैंने ज्ञान-योग का पुरुषार्थ प्रारंभ किया। कुछ समय बाद बाबा ने दादी हृदयमोहिनी जी के द्वारा यह संदेश दिया कि यह बाप का चुना हुआ रत्न है। बहुत खुशी हुई कि स्वयं भगवान ने हमें चुनकर अपना बनाया है।

सन् 1975-76 में जब हम अपनी प्यारी भारत भूमि पर सदा के लिए लौट रहे थे तब, पढ़ाई डिस्टर्ब न हो इस ख्याल से, दादी जी की अनुमति से हमें वर्षभर के लिए हॉस्टल में रखा गया। वहाँ भी हमने बाबा की श्रीमत प्रमाण ज्ञान एवं योग को प्रतिदिन करने का नियम बना रखा था। हर रोज हम बाबा की कोई-न-कोई अव्यक्त मुरली पढ़कर स्कूल जाते और नुमाशाम का योग आधा घंटा जरूर करते। स्कूल में सिनेमा दिखाया जाता तो हम तीनों बहनें कभी नहीं जाती, कमरे में बैठकर पढ़ाई करती थीं।

थोड़े दिन बीते और स्कूल में चुनाव होने लगे। एक लड़की ने इलेक्शन के लिए नाम दिया। विरोधी पार्टी ने निश्चय किया कि उसे जीतने नहीं देना है परंतु उसके प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़े रहने की किसी दूसरी



लड़की में हिम्मत नहीं थी। कुछ भाई-बहनें मेरे पास आये और कहने लगे, आप आध्यात्मिक विचार रखते हो, अगर जीत जाओ तो कितना अच्छा होगा। हमने भी सोचा, स्कूल में कुछ अच्छा काम करने का सुअवसर है सो स्वीकृति दे दी। वह लड़की चुनाव में हार गई और हम जीत गये। हार का ज़ख्म उसके लिए असहनीय था इसलिए बदले की भावना से उसने मुझे परेशान करना शुरू किया परंतु उसे सफलता मिल नहीं सकी क्योंकि विद्यार्थीगण तथा शिक्षकगण का पूरा सहयोग मुझे मिल रहा था।

विद्यालय परिसर में एक योग-कक्ष बना हुआ था। एक शाम को मैं अपनी सखी के साथ योगाभ्यास करने जा रही थी। रास्ते में, हमसे पिछली कक्षा में पढ़ने वाली एक बहन भी योगाभ्यास के लक्ष्य से हमारे साथ चलने लगी परंतु कुछ कदम चलने के बाद यह कहकर लौट पड़ी कि 'कल परीक्षा है, पढ़ना है, फिर कभी चलींगी।' रास्ते में दोनों ओर झाड़ियाँ

थीं, उनके पीछे कोई छिपा था। जैसे ही उसने दूर से देखा कि कोई आ रहा है, उसे भ्रम हुआ कि शायद ऊषा (लेखिका) ही है। उसने बड़ा-सा पत्थर उठाकर जोर से मारा जो उस लौटती हुई बहन की बायीं आँख के ऊपर माथे में लगा और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। हमें कुछ पता नहीं था। किसी ने आकर उसे अस्पताल पहुँचाया। उसे तीन-चार टाँके आए। जब हम कमरे में आई तो हमारी छोटी बहन ने बताया कि पत्थर मारने का दोष तुम्हारे सिर लगाया जा रहा है। कहा जा रहा है कि पत्थर मारकर तुम योग-कक्ष की ओर चली गई थी। हम उसे देखने गए। चुनाव में हारने वाली लड़की उसके सिरहाने बैठी थी और सेवा कर रही थी। चोटिल बहन की छोटी बहन गालियों से मुझ पर बरस पड़ी। हमने कोई शब्द नहीं बोला, वापस आकर पढ़ाई में लग गये। परीक्षा अगले दिन से शुरू हुई। पत्थर वास्तव में चुनाव हारने वाली बहन ने मुझे लक्ष्य बनाकर मारा था ताकि मैं परीक्षा न दे सकूँ परंतु उल्टा हो गया। वह स्वयं परीक्षा न दे सकी। हमारा रक्षक बाबा हर घड़ी हमारी पालना कर रहा था। जैसे ही परीक्षा पूरी हुई तो चोटिल बहन के माता-पिता उससे मिलने आये। उसके पिता गुजरात के कुख्यात तस्कर थे। आपातकाल के दौरान उन्हें जेल हो गई थी, वे उसी दिन मुक्त होकर सीधे ही अपने बच्चों

से मिलने हॉस्टल में आये थे। अपनी बच्ची का हाल देखा तो उन्होंने पूछा, यह कैसे हुआ?

चोटिल की छोटी बहन ने बताया कि एक लड़की ने उसको पत्थर मारा है। पिता क्रोध में भरकर गाड़ी से छुरा उठाकर मुझे ढूँढ़ने लगा। मैं अपनी सहपाठिनी बहनों के साथ छत पर थी। समाचार मिला तो मैंने छत से नीचे देखा, हाथ में छुरा लिए वह गुस्से में ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था परंतु यह कहकर कि 'यह गर्ल्स हॉस्टल है, आप इसमें प्रवेश नहीं कर सकते', उसे रोक दिया गया। फिर उसकी माँ मेरे पास आ गई, उसे देखकर मुझे कोई भय नहीं लगा, जैसे कि बाबा मेरा ज़िम्मेदार था। मुझे मार डालने की वह बार-बार धमकियाँ देने लगी। बीच में एक बार रुकी तो मैंने कहा – आंटी, हमने तो नहीं मारा, यह दोष हमारे पर डाला गया है परंतु वह बरसती रही। प्राचार्य, आचार्य, सबके होते हुए भी उसे रोकने की हिम्मत किसी में भी नहीं थी क्योंकि सबसे ज्यादा डोनेशन वही देती थी।

कहा जाता है, 'जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आँधी और तूफान'। उसने मारने के लिए अपना हाथ उठाया लेकिन बाबा ने जैसे मेरे ऊपर अपना रक्षा-कवच डाल दिया। वह हाथ हिलाती रही पर मुझे मारने की हिम्मत उसकी नहीं हुई। कमाल बाबा की थी जो वह

महिला मुझे स्पर्श तक नहीं कर सकी। इस तरह रक्षक की छत्रछाया का सुन्दर अनुभव हुआ।

अपने जीवन को बाबा की सेवा में लगाने की प्रेरणा हमारे मन में आती थी। पढ़ाई में अच्छे नंबर आने के कारण यह संकल्प था कि सी.ए. (चार्टर्ड एकाउंटेंट) की पढ़ाई करूँ लेकिन कहावत है, 'नर चाहत कुछ और भई और की और'। परीक्षा देकर मैं मधुबन आई। अव्यक्त बापदादा से मिलते समय पूछा, बाबा, आगे पढ़ाई करें? दृष्टि देते हुए बाबा ने पूछा, जीवन का लक्ष्य क्या है? भगवान के प्यार में सारी दुनिया भूल हमारे मुख से निकला, ब्रह्माकुमारी बनना तो फिर बाबा ने श्रीमत दी – समय कम है, गफलत मत करो, सेवा में लग जाओ। भगवान की आज्ञा को मान हम थोड़े दिन मधुबन में सेवार्थ रुक गये। हमें मधुबन में शिविरार्थियों की सेवा के लिए नियुक्त किया गया। जो भी सेवा मिली, दिल से की, जिस कारण बाबा ने हमें मिली हुई सेवा के योग्य भी बना दिया।

एक बार अचानक रात्रि को 9 बजे हमें कहा गया कि सुबह 6.30 बजे शिविर वालों को सृष्टि-चक्र पर समझाना है। हर बार की तरह 'हाँ' तो कर दी परंतु मन में संकल्प चला कि डेढ़ घंटे तक क्या बोलेंगे। रात को ही निमित्त बहन से पूछा कि यदि सृष्टि-चक्र का पाठ जल्दी पूरा हो गया तो

क्या करना है? उन्होंने कहा, त्रिमूर्ति वाला पाठ पढ़ा देना। फिर इस विचार ने कि 'हिम्मत का एक कदम हमने बढ़ाया तो बाबा से हज़ार गुणा मदद अवश्य मिलेगी', मुझे निश्चिन्त कर दिया। अमृतवेले भी बार-बार संकल्प आया कि आज मुझे बाबा की मदद का अनुभव अवश्य करना है।

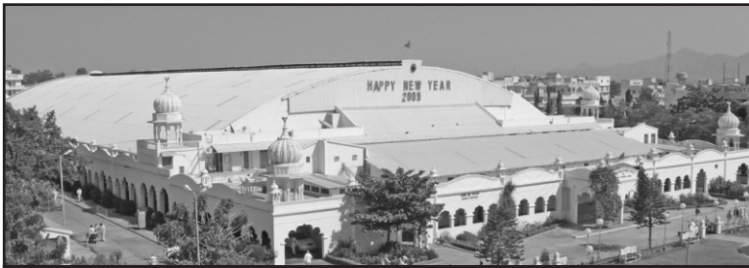
योग के बाद अपने कमरे की अलमारी खोली, देखा, सामने दो पत्रिकाएँ रखी थीं। खोला तो सृष्टि-चक्र का ही लेख सामने था। उसे पढ़कर कुछ हिम्मत आई। फिर भी मन में निश्चय और संशय का युद्ध चल रहा था। गद्दी पर जाकर बैठी तो अनुभव हुआ कि मैं बाबा की गोद में हूँ। अनुभव हुआ कि बाबा ही बोल रहे हैं और जब बोलना बंद हुआ तो देखा, घड़ी में आठ बजे थे। तब से 'सर्वशक्तिवान बाप मेरा साथी है' – इस संकल्प से आत्मविश्वास आ गया और मैंने जीवन को बाबा की सेवार्थ समर्पित कर दिया।

परमपिता परमात्मा शिव की पालना का यही अनुभव है कि किसी भी कठिन कार्य में बाबा साथी बनकर हर पल, हर घड़ी ध्यान रखता है और मदद करता है। दिल बार-बार गाता है – 'तुमने प्यार किया है जितना, कौन करेगा इतना..'.। बस, मन में यही आश है कि मैं ईश्वर के प्यार का रिटर्न उसके जैसा बनकर और उनका नाम जग में रोशन करके करूँ। ❖

ईश्वरीय टॉनिक

राजीव पाठक, बरेली

राजयोग के अभ्यास से एक चमत्कारिक परिवर्तन मेरे जीवन में हुआ है। वह यह है कि बचपन से ही मुझे उचटती नींद आती थी तथा भयभीत करने वाले स्वप्न देखा करता था जो मुझे जाग्रत अवस्था में भी बेचैन रखते थे। अपनी इस स्थिति से मैं सर्वथा त्रस्त रहता था। मैंने मनोविज्ञान में सिगमंड फ्रायड के स्वप्न संबंधी विचार भी पढ़े थे तो मैं कारण तो जान गया था परंतु निदान नहीं मिला था। जब से मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाकर राजयोग का अभ्यास करने लगा तब से मुझे बहुत तेजी से इस प्रकार के सपने आने कम हो गये और अब तो बंद ही हो चुके हैं। मैंने मन ही मन विचार किया कि ऐसा कैसे हुआ, तो लगा – 'मैं एक ज्योतिर्बिंदु आत्मा हूँ और मेरा पिता परमात्मा शिव है। ईश्वर सर्वशक्तिवान है, मेरा घर परमधाम है। इस सृष्टि रंगमंच पर मैं पार्टधारी मात्र हूँ, इसके अलावा सब मिथ्या है, स्वयं को किसी देहधारी के कारण कष्टप्रद स्थिति में रखना आवश्यक नहीं है', इन सब बातों का चिन्तन 'टॉनिक' का कार्य कर रहा है और अब प्रातःकालीन वेला में नित्य ईश्वरीय महावाक्यों का श्रवण मन को शांति एवं स्फूर्ति से भर देता है। शिव बाबा की असीम कृपा से मेरे जीवन में सुखद परिवर्तन आ चुका है। कलियुग के कगार पर ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चलाया जाने वाला आध्यात्मिक कार्यक्रम हमारे उद्धार का साधन है। मैं शिव बाबा का लाख-लाख शुक्रिया करता हूँ कि उन्होंने मुझे अपना बना लिया। मैं उन सभी आत्माओं का भी आभारी हूँ जो इस पुनीत कार्य में लीन हैं। ❖



ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर में स्थित डायमण्ड जुबली हॉल जिसे 'लिम्का बुक ऑफ नेशनल रिकॉर्ड्स' में 'विशालतम स्तंभ रहित अंतर्राष्ट्रीय सभागार' के रूप में दर्ज किया गया है

ईश्वरीय वरदानों से विभूषित सुन्दरी बहन(पूना)

साकार बाबा ने दादी जानकी जी को ईश्वरीय सेवार्थ पूना भेजा। दादी जी के विदेश में बेहद सेवार्थ प्रस्थान के बाद निमित्त सेवार्थारी बनीं ब्र.कु. सुन्दरी बहन। ब्र.कु. सुन्दरी बहन ने पिछले 50 वर्षों में पूना तथा आसपास के सेवार्थानों पर ईश्वरीय सेवा की और 24 फरवरी 2009 को अमृतवेले पुराना शरीर त्याग प्यारे बाबा की गोद समा गई।

‘सुन्दरी पूनावालों की पालना करेगी’, ‘बच्ची, जहाँ भी हाथ डालोगी वहाँ सोना ही निकलेगा’, ‘आप वेस्ट को बेस्ट बनाने वाली हो’ बापदादा के ऐसे श्रेष्ठ वरदानों से विभूषित थीं ब्रह्माकुमारी सुन्दरी बहन।

साकार मम्मा और बाबा की अमूल्य पालना, भगवान की मेहर नज़र, दादियों की कृपा-दृष्टि तथा ब्राह्मण परिवार की शुभ भावनाओं, शुभ कामनाओं से आपका जीवन संपन्न था। आरामदायी लौकिक जीवन का त्याग कर आप ईश्वरीय सेवाओं में समर्पित हुई थीं। ‘मनुष्य मनुष्य को धोखा दे सकता है लेकिन भगवान कभी धोखा दे नहीं सकता’, यह अलौकिक धारणा आपके दृढ़ निश्चय की आधारशिला थी। आपकी वाणी सदा कहती थी, ‘जो कुछ पाया वह योगबल से पाया।’ शान्तिप्रिय और कर्मयोगप्रिय आपका जीवन लव और लॉ के संतुलन का मिसाल था। आपके मस्तक की दिव्य आभा, चमकीले नयन और शक्तिशाली दृष्टि लंबे समय के पुरुषार्थ की तथा दिव्य अनुभवों की गवाह थीं। आपके सान्निध्य में आने



वाली आत्मा को अलौकिकता का अनुभव न हो, ऐसा कभी नहीं हुआ। आप मातेश्वरी जगदम्बा की याद अपने व्यक्तित्व से देती थीं।

बहुत-बहुत भाग्यवान हैं वे भाई-बहनें जिन्होंने आपके पारस सम संग से अपना जीवन परिष्कृत किया है। आप योगनिष्ठ, महातपस्विनी, अलौकिक माता के रूप में सभी की पालना करने वाली, दिव्य गुणों की खान, अनेकों का जीवन संवारने वाली थीं। आपका संग हिम्मतवान बनाता था। वाणी सिद्धिस्वरूप थी। आपके हर श्वास में बाबा और सेवा समाई हुई थी और नामप्रमाण काम भी सुन्दर था। बोल वरदानी थे। कमज़ोरों को बल देने वाली थी पर कमज़ोरों पर महाकाली थी।

आप बापदादा की श्रीमत पर एक्यूरेट चलती थीं और औरों को भी चलाती थीं। इसके कारण सभी को आपके प्रति आदरयुक्त डर था। परखने की शक्ति का आपको वरदान था जिससे आपके द्वारा ईश्वरीय सेवाओं का विस्तार बहुत ही सफलतापूर्वक हुआ।

आपके जीवन की बहुत बड़ी विशेषता थी – कोई जिज्ञासु कितना भी लौकिक दुनिया में महान हो, धनवान हो, गुणवान हो, सत्तावान हो, आप रिंचकमात्र भी कभी किसी पर प्रभावित नहीं हुईं सिवाय बाबा के। ईश्वरीय सेवाओं में अविरत सच्चाई, सफाई, ईमानदारी, सरलता होने के कारण आप बिल्कुल निडर रही। महिमा से दूर, बड़ेपन से किनारा और बाबा की ज़िगरी याद से आपका जीवन सदा उमंग, उत्साह, रूहानी रूहाब, रमणीकता से संपन्न रहा।

हम सभी पूना निवासियों का परम सौभाग्य है कि आपकी पवित्र पालना की छत्रछाया में पले। अब आपकी सूक्ष्म पालना भी हम बच्चों को मिलती रहे, यही बाबा के दरबार में हमारी अर्ज़ी है। आपकी अनगिनत पावन स्मृतियों को कोटि-कोटि वंदन!

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। सह-सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 worldrenewal@bkivv.org